

2319

ASIAN ARCHIVES

॥ नमः श्री गुरुदेवे नमः ॥ ॥ ७ ॥ एतद् गुरु सा विरु तै लो का धि पति पु सु ॥ नाना रा सु ध
त प शरा ज नी ति स मु र य ॥ १ ॥ ता हा पु त्र सा आ त पर मे श्वर श्री कृष्ण को ना म पा र्थ ना गरी ना ना
या मु रा ज नि ती को अर्थ स वि स्ता र ग रि के न के दु दु ॥ ॥ अर्थ तै व नि दं शा मु न रो सा र्थ तै त
ते ते ॥ ध म्मो प दे रा वि न यं का र्ण का र्ण मु ना मु न ॥ २ ॥ ता हा पु त्र नी अ य ते म नु स रे यो रा मु को
अ र्थ ज ष्ठे वि स्ता ग री ध म्म अ ध म्म का र्ण अ का र्ण स म स मु क मो जा ता ॥ ॥ त द हं सं पु र्व ना मि न
रां ना हि त का र्ण या ये न वि स्ता ग रा ये न ना तै र हि त का र्ण ॥ ३ ॥ ता हा पु त्र म नु स रे यो सा मु
को दि त ग ल यो सा मु को अर्थ म नु स रे यो सा मु को अर्थ दि त ग ल वा वा म ह ना री ते ग
या को ज ला यो सा मु ते हा न ग ली ॥ ४ ॥ मूल सू त्रं पु र्व आ मे ना न क ने तु ना धि तं जे न वि स्ता त मा त्रे

॥ स चेत त हा आ र्थ ॥ ५ ॥ ता हा पु त्र सा आ त मूल सू त्र को अर्थ ना न के रि वि श्व र क हं दा त या को दि पु
स रे यो सा मु को वि स्ता र उ मु ला पे सो ग री पर मे श्वर ते ते त न वि श्व र त्र ना न जा द यो ते ते त र ह सि त मु क दो
जा ता ॥ ॥ मूल वि श्वो प दे जे न दू सा धि त र गे न वा दि ष ता स पु यो ग ने पं डि तो य वा शि द ति ॥ ५ ॥ ता हा
पु त्र मूल जा ति वि श्व अ र्थ त्रि मि स मु स ग पि ति ग ना दे वि आ उ द्यो पर ला अ व स ॥ अ मु दि ने स र्ग स प
के पं डि ते स र्ग स के वा कु ले नी स र्ग मि त्र त्वं अ र्वा णो ना व शि द ति ॥ ६ ॥ स ग ग नु प या गु न वृ त्त स ग ग नु
वा ते ग नु प या ता ने व त स ग ग नु मि त्र ग नु प या कु ले व त स ग ग नु वा ते ज म्म ग ना त को का र्ण स पु न वि व
हो ता ॥ ७ ॥ उ न्न ता ना मु ज ग ना म म पा ना व द ति ता ॥ श्री ना रा जं कु ला ना र वि स्ता सा ते ग ता उ व ॥ ८ ॥
उ न्न ता स ग मु ज ग स र्ग स ग श्री स ग र्ग श्री स ग नृ प रा जा स ग पे ति जा ते स ग ज ष्ठे दू र ग ली त त्को पर मा

ॐ आउ सउ न होला ॥ वैरिना सह विद्या तं यो नर केतु निदु ति शदे आगे पु सं शु पुं पतिन पतिध ते ॥
॥ जा हा पु रूष ते श दु स ग ग रि व्या स ग तु ला दे स मा वा दै क न नि न सा व सा रे दि या ज हि ष मा रि दि या
मा त्रे वि दु नू ला ॥ ॥ व न था न्य पु यो गे कु वि द्या सं ग्र ह ए पु च ॥ आ हारे व वा रे पु च न्ना र जा सं डा न वे ॥ ॥ को
हि पु रूष ते स प ति त ला उ री वे ति कि सा ने ग री वि द्या सि क री लो ज ने ग री ता त ज्जा स ने ने न मा रु ॥ ॥ न पु २
रू स द सो मा ता न पु रू स द से पि ता य त्तारे नि मा हा गारे सं सार द धि रू रं ॥ ॥ १० ॥ गु रू स मा न वा वा प नि हो
ई न म रु ता रि प नि हो ॥ ॥ पु रू स मा र सा ग र पा गु रू ते उ ता उ रू पु आ सा वा पु म री प नि पु रू व डी डे बु ॥ ॥ १० ॥
मा ता ग मा स मा ती र पि ता पु रू र मे व च ॥ ॥ ११ ॥ उ रू के द र ती र ती र मा ता ग मा पु न पु न ॥ ॥ १२ ॥ को हि पु रूष को प नि
म रु ता रि ग मा तु ल पि ता पु रू र ती र तु ल पु रू के द र ती र तु ल मा ता स र व ग मा तु ल ॥ ॥ वि द्या रू पं क रू

पा ता ज मा रू पं त प वि द्या को कि ला न्य रू पं ना रि रू पं प ति पु ता ॥ ॥ १३ ॥ रू प को रू प न यो वि द्या त प वि द्या को
रू प न यो स मा को कि त को रू प न यो स र सां को रू प न यो पु ति पु ता ॥ ॥ १४ ॥ न व वि द्या स मा रू न न र वा धि
स मा रि पु न या प त्त ह म त्रे हो न व दै वा प रं व र ॥ ॥ १५ ॥ य पु व त को वि द्या त नु को वा धि अ त्रे हो सी ती को को
द री वै रि को वि द्या ता स म को हो दै न ॥ ॥ वि द्या पु रू सि तो मि त्र सा र्वा मि त्र ग र हे पु च आ तु त सो ष ध मि त्र पु
म मि त्र प र त्र च ॥ ॥ १६ ॥ प र दे स को मि त्र वि द्या ग र हे को मि त्र सी रोग को मि त्र ओ ष धि प र रोक को मि त्र व र
हो ॥ ॥ १७ ॥ दु रा धि ता वि ष वि द्या अ जि री लो ज न द र ॥ ॥ वि ष गो हि द रि पु रू व द रू स त रू नि वि द्या ॥ ॥ १८ ॥ अ न्या रू
न ग मा ज न्या को वि द्या प नि वि हो न व ल व रु ति अ न्न पा या अ न्न वि ष रू रू आ पु ग रि प न यो द रि द रू
मा उ ई ह मि त्र ये वि ष रू रू उ टा पु रूष के न त रू नि द्या वि ष हो ला ॥ ॥ अ नो नो स रू ता वि द्या नि च हो ला ॥

हतासीया॥ कुत्रिये नरुतं सत्र नृत्तदोषै हता नृपा॥ १॥ अन्नाद्यनग्न्या जाना कोविदा षेरजाला विनाकारन
लेहान्नाशुतेर्वसेषे लजा दुः॥ अजोगे विउ हाना कोषे तवे लजा दुः नउजिके मंत्रा दुः न्या राजा वेल जा दुः॥
॥ ॥ यस्मिन् पुत्रो न विद्या सो न सुरो न रपदात्त॥ अधकाते कुत ते ह न सुबन्ध वसवरा॥ ॥ कोहि पुत्रस्य को
पुत्र सा सुवत विद्यावत न तया दे सि ऐस को ऊर माहा चन्धमान तया को रात्री ज्यो अधारो होला॥ ॥
शर्चही दीप को उर उजाते रविदिप का॥ नै लोका दीप क धर्म सुपुत्र कुल दिप का॥ ॥ रात्री को यो ला च
कुमालो दिन को सो ना सु र्य हो नै लोका को लो क धर्म हो कुल को सो जा दु पुत्र हो रा हो॥ ॥ जने
ता वो प नै ता वो यस्तु विद्या प्रयत्ने॥ अने दाता न य दाता पवतै सीत लह जा॥ ॥ आप पतिया रः
गन्या आपु विद्योहि का उना आपु जिय लाई न य दुना न य तो उना आपु लाई न दिना आपु ज न दिना

पावज नाक न वाहु न नु॥ मण्डप निराज पति मित्र पति तयै व व पति प्राता ह प्राता व पवै ते नाह ल
हता॥ ॥ ॥ उरुपा सी न या राजा का सी न या मित्र का सी न या आप ना सी का म ह ता सी न या आप ना न ह ता
सी न या ई पावज ना लाई न ह तो री न नु॥ ॥ लाह य पंचवर्षा नी द सवर्षा निता द य स पापे बो द ये व से
पुत्र मित्र स मा चरे॥ ॥ काहि उरुष का पुत्र पाव व र्त म आप ना सु व मा हा हा ह नु वेल नु दिनु पाव
व र्त उ पाते द सवर्ष स र्म ना उ मा रा व डे द सवर्ष उ पते होर ह वं ज या पा दि वं ड पुत्र मित्र स मा न न नु॥ ॥
लाह ना व ह दो दो षा ता द ना व ह दो पु न॥ त स्मा पुत्र शो क स नु ता द य न्ने ह ला ह य॥ ॥ आप ना
पुत्र न या प नि अ ने गं पु न सि त जु पु ति गा रे ता द ना ग रि ला व डे आप ना सु व मा न रा व डे ता द ना मा रा षा
को न या व रु त गु त गु न पा उ ह॥ ॥ ॥ विरजा स यो मा ता पु ता या कि प्र यो ज नै॥ त व नौ या दि न ह ता पु ता

वादि योजन ॥ २३ ॥ कोहि पुत्र कोहि माया सा ज्ञान न नार स आधि न पैसा उजाव न हि न हो न पैसा
 नरपनि नर के काउता ॥ ॥ पुत्रास्तु विविधे साधु नियोज्य तत्ते तं उधै ॥ निति ज्ञातु धिसं पत्ता चैव निति
 सर उजिता ॥ ॥ पुत्र के न ज्ञान उधिसं मल साधु ज्ञान्या को नया देविका मका जे ज्ञान्या देवि हो के स मल
 ले माना गे ॥ ॥ पद्य पुत्र कि मार स मपचो नार वारु के ॥ पद्य तपु जितो राजा पद्य पुत्र दिने दिने ॥
 ॥ २४ ॥ चान करि विवर ह्ये ॥ पूर पुत्र के न निवे सागरि अति दिना जया साधु ज्ञान वृत्त न नया देवि
 पराय को नारि वो कि सानु पती साधु वृत्त ज्ञान न वधि वत न यो राजा लेपनि माने गती दिन पति अ न्या सागर
 ॥ ॥ पुणे पुत्रिय ता यत्ना कि सा तो पै पुयोजन ॥ दे प्रया ते न र्य बाहि गाव वैव विव जिता ॥ २५ ॥ निगुनि
 पुत्र नया देवि के हिला दिन के लो नया देवि न्या सागर के न यं वैव विव कन बधि हिन्दा पनि कोहि ये दे न न सै

परिकारने निगुनि पुत्र नया देवि के हिला गे दे न ॥ ॥ नर सा नर न रूप रूप स्या नर न गुण ॥ गुण स्या नर ए
 ज्ञान ज्ञान सा नर न स न ॥ २६ ॥ मान त को ग ह नार रूप रूप को ग ह न ॥ गुण को ग ह न ज्ञान ले
 ज्ञान को ग ह न स मागे नु ॥ ॥ गुण ए दे सि मा रूप शिल ए से सि मा कुत ॥ सि डि ए दे सि मा विद्या
 जोग ए दे सि मा धन ॥ २७ ॥ मन म रूप न नया रूप से जे नु गुण न नया शिल से जे नु शिल नया कुत से जे
 नु धन न नया द न नु न से जे नु ॥ ॥ अ गुण स ह न रूप अ शिल स ह न कुत ॥ अ सि डि अ ह न विद्या
 अ जोग स ह न धन ॥ २८ ॥ मन अ का रूप को ज्ञान न न गुण गुण न नया रूप से जे नु शिल न नया कुत से
 स जे नु अ सि डि नया रूप से जे नु द न नु कन नया धन से जे नु ॥ ॥ गुण नु सा य ते रूप शिल
 नु सा य ते कुत ॥ सि डि नु सा य ते विद्या जोग नु सा य ते धन ॥ २९ ॥ मन अ को रूप को ज्ञान न विद्या गुण को

मानन विद्या विद्या को आचरन सिद्धि धन को आचरन दुहं हं के ॥ १॥ हं कुले जौ जय कं न्या उत्र विद्या
 पुये जय ॥ वसन जो जय दुनु मित्र धर्म वृजो जयतु ॥ २॥ दोरी दोनु कुल माहा दोरा विद्या हा गनु
 विद्या माहा शत्रु विवाहा गनु आपा माहा मित्र विवाहा गनु धर्म माहा ॥ ३॥ नो नू श्रुति वराते
 रु नू निष्ठा सहात ॥ वव सा सुसाहा यो न नाति पादा साहातर ॥ ४॥ निवयन मनु मते ॥
 ये कायेत गरा मेरु पर्वत पनि उ वदेन पातात जानु पनिगा हो देन सा गर सपुटे पार दुनु पनि
 गा हो रु न देन पातात जानु पनिगा हो देन पैसा अर्थ तेता निवत मनु सहे पै क विते मन ग
 या के हि का म ग आपनि पातरा गदु ॥ ५॥ श्री केन वत वधेन पां दे नै का अले एव ॥ अर्थ

दिवस कुर्या दाना धय न के ॥ ६॥ अद्धि दु गया मो क पै कै ले प नि दु दु पै क पा द ले प नि दु दु पै ति
 अर्थ लार् अद्धि दु न गनु ॥ ७॥ यो जे नाना सहस्रणि वरज पा नि पि पि लिका ॥ अर्थ ग द्धै न ते यो पि प द मे क ने ग
 द्ध ति ॥ ८॥ पै क विते ग या स पु ड पा ने तर न स कु द्ध पै सा अर्थ ले पै क विते म न गनु ॥ ९॥ श नै रं वा श नै वि
 द्या श नै प र्व त मा लु हा ॥ श नै ध म्म श्रु का न श्रु वा या म र श नै श नै ॥ १०॥ संपत्ति तुल्या उनु विद्या शिकनु
 कि सा न गनु ध र्म गनु ऐ ति चार वो क स म्म न मा नि य नु का र्ज ॥ ११॥ गुरु ह्म ह्म स या विद्या पु ट्को न ध ने न वा ॥
 अर्थ वा वि द्या या वि द्या श्रु तु वा नो प रो च्य ते ॥ १२॥ गुरु को न कि लै के न अर्थ वा नि र्च ग या को ध म्म दि
 के न अर्थ वा विद्या दिई के न पनि विद्या सानु ॥ १३॥ पै का अर प दा तार यो गुरु ना ली म न्य ते ॥ आ न यो नि श्रु त ग

आनन्दाको सुत हो ॥ ॥ गुना सर्वत्र पुजाते एतद्वं सो निर्वर्धकं वासुदेवन प्रसूति वसुदेव त तेजना ॥
॥ त्रिभुवनमाहा पुन उजा गदु वासुदेवा नेन रुदेन ज प्रो एण को परि माने जा न्ना को दू ता ए यन को
पुजा ग ना ज सो भ मा हो ता य हो परि कार ले वा वा वसुदेव लार् को ही पुजा ग दै नु ॥ ॥ एण कु र्द कि दु त
त्तु दु ल पि व स तां स तां ॥ के त कि ग न्ध मा प्रा य स्व य ग दू ति ष त प डा ॥ ४५ ॥ एण व त स ग सा धु ज न स ग
पि ति ग या ज न्ने रि के त कि को का स ना ते न्नु रा गु ज मा न ग रि व मू द न सै ग रा पु न व त ल र्द धी न य
प नि सो क स मे स ते मा न ग दू ॥ ॥ वि श्वा न्ध व नृ प त व न हि तु स प रा कृ मः ॥ स दे स उ जी तो रा जा वि श्वा स व
त्र उ जि ता ॥ ४६ ॥ रा जा र वि श्वा ऐ कै रु दै न रा जा ने न्ना को आ फ रा ज मा मा त्रे मा न ग दू वि श्वा मा स गु ए
ता व स म स ज न्ना लार् जा हा ग या पा ने रा जा ले प नि उ जा ले प नि मा न्ग ग दू ॥ ४७ ॥ ऐ कै ना पि स पू त्रे न वि श्वा

उक्तेन साधुना ॥ कुलपुरुषसिरेन च नृनैव प्रकास्यते ॥ ॥ पुपुरुषको विद्या साधुजनको धर्म आ फ्रा उ
ल लार् वि रु ग लार् च नु मा को कि रि नि ज न्ना कि रि प्र का स ग न्ना ज या ऐ क हो रा ले प नि रु दू ॥ ॥
वि श्वा यो ज ज ने का वे त के श्वि नो न य भ य ज ज ने ॥ उ न यो ज ज ने क श्वि क श्वि उ व स्य ज ज ने ॥ ४८ ॥ को हि ए
रू ष ले वि श्वा प नि ध न प नि नु या उ नु न दू को हि ए रू ष ले ध न मा त्रे नु या उ न दू ध न न या प नि वि श्वा सि
के नु ध न न न्ना प नि वि श्वा उ त हो ॥ ॥ न म ति फ लि नो व स न म ति गु नि नो ज ना पु क्क क ष व मू र्ख व ली
य ते नं व म न्द ते ॥ ४९ ॥ को हि ए स फ ल न्ना रु दू को हि म नु स नि गु नि रु दू ज न्ने ग रा त्ता को का वि उ
मा उ दा त्ता व दू न सै ग रि नि गु नि म नू स ता र्द स रु दै न ॥ ॥ न हि क र्त्त नि च त्ता रि स था का ले प्र यो ज य त
आ हा रो मे पु ने नि डा त्ता या या य मे व वा ॥ ५० ॥ को हा न ग नु नि डा ग नु वि श्वा सि का उ नु मे पु न ग नु

पतिगार परिकार संथा मान गनु ॥ ॥ आहार जायते बाधि ग नातु कृतु जायते ॥ अलक्ष्मी कथ्य सखा
या सपाया दार्द्र्य मया ॥ ५१ ॥ सखा काल माहा आहार ग याना नावे या होला मुा सगपे मग ना गर्न माहा
अ कुरी होला सखा मा मु त्या लक्ष्मी ले वा सने गती सखा मा विद्या सि कार्या आ पु पु यो होला ॥ ॥ वेडवे
डा गत त्व जो अप हो म परायन ॥ आसि वा ड प हो नि तां पेष रा जो पुरो होला ॥ ५२ ॥ को हा वा ल न वे डे वे
डा ग हो म क्री का ज प म त्र त त्व जाना आसि वा ड डिनु जाना लाई पो रो हिते गनु ॥ ॥ प्रा ता ग्री गो म हि पा ले
श्रि ड कर्म विव जिता ॥ वि बु धा व परि ता गी स मू दू ष स म सु वं ॥ ५३ ॥ ता नि व त को म र व र न ग ना हि
ड व र न न ग ना आसि थ्या न दो ल ना मा हो त्या गी रु न्या सु ष दू ख जाना पे ला लाई राजा गनु ॥ ॥ ऊ त् सि ले
उ णे पे तं स त्प ध र्म परायन ॥ प्र वि ने ये स डा ड म र जा थ भो वि धि य ते ॥ ५४ ॥ को हि ऊ त् वे त पु ण वे त स त्प वे त

धर्म क व तु र म मा व त वि व स न पे ला लाई राजा न तु ॥ ॥ ऊ त् वे श नि तो लू द अ पु ग र्म र रा ज वे ॥ अ ना य
व य क र्म तं ना धि प त्प नि यो ज य तु ॥ ५५ ॥ क्रो धि व नि अ ज्ञा नि आ प ष मा वि ता उ नु आ ते मा न जा ना आ पु नु क्रि
ग न्या वि द्वा ना लाई न डि न्या पे ला लाई राजा न गनु ॥ ॥ मू ल व ति ही तो धार स र्व स नि पा र्म म के ॥ पु रि व
व व सा यु व ध र्म अ भो वि धि य ते ॥ ५६ ॥ जा का र्म ग नु दू सो का र्म आ पु नु रि त न ग रु धी र्म व न स म ज
र न न मा हा प नि जि ट स म ग ना ॥ ५७ ॥ मि ष ह म स र्व डा म धु र वे र न ग ना आ फ ना वि त वि र ना वि त पे क दे ष
न्या पे ला लाई ध मि ष जे नु ॥ ॥ आ यु ग ड रु त न्या स र्व र त प य ड स न ॥ आ यु सि ले पु ण पे त पे व चै अ वि
धि य ते ॥ ५८ ॥ ना डि को ने ड वि ला र जा ना पे र मा ल्म जा ना शि ले त्प ना व रु न्या ला व जे क्रि रु न्या ना डि को ने
ड पाई वो ष धि डि न्या पे ला लाई वे दो न तु ॥ ॥ पि त्प पि ता न हो द म सा द शो मि ष पा व का पु वि व क थि न चै व

हकारप्रसस्यते ॥ ५४ ॥ वातुवराजुदेवि कामवे सानुज्या न्या पाचकजान्या कानि वत पेला लार् नंदारिगनु ॥
॥ स रुद्ररुद्ररेता यो लुपु रु लो जि ता भर सर्वसनु सना लो क पे ष ते ष क उ च्ये ते ॥ ५५ ॥ ऐ के व रु न न
अर्थ बुज न्या शि पु गरि ले ष ना अ मर को जे द जा न्या स जै सा ल को अ न्या स न या को ऐ ला लार् अ मरि न
नु ॥ ॥ इ गिता काल त त जौ वल वा प्रिय ड सन ॥ अ प्र सा दि स द द अ प ति हार स उ च्ये ते ॥ ५६ ॥ कार्य गनु
अनु सार मा वल वर्त लो क प ति हार म नार् गनु स मा दि क न द या वत नै क न र रु ना पे ला लार् प ति हार ग
नु ॥ ॥ स म ल क त सा ल क प दि त अ जि ता पु मा धे र्य वि र्य गु णा पे तं से ना ध्य सो वि धि य ते ॥ ५७ ॥ सा ल क
त सा ल बुज न्या वि व स न ज्ञान वत ना ना अ ति स या को ध ज वत बु धि वत पे स लार् म त रि गनु ॥ ॥ ह ह स
॥ ५८ ॥ सा ल जो वा हु ने पु प रा जि त ॥ सो र्य वि र्य गु णो पे तं अ स्वा ध्य सो वि धि य ते ॥ ५९ ॥ स न स सा ल जा न्या वि

वाहार बुज न्या आ प्रु वि हो र बुज न्या सु रा वतं गु न व त पे ला लार् अ स्व वार गनु ॥ ॥ मे धा वि वा क्य तु प्रा
तु परि वि तो परि अ के ॥ धि रो य यो क्क वा दि व पे ष दू लो वि धि य ते ॥ ६० ॥ स नि वत म धु र व र न ग न्या अ र का र
इ दो ध ग न्या स न्य कु लो ग न्या पे ला लार् दू त पु चा उ न ॥ ॥ पा थि व स्य व न्त स्य व द मि ठ ए त अ न ॥ ये न स व द
तै रा जा नं ए न्ना र त यै व व ॥ ६१ ॥ रा जा के न यो ध ग न्या रा जा स ग का र्य ग न्या उ ग्रा म मा रु रा जा लार् दृ ति ग न स क
न्या पे ला लार् न क न्या गनु ॥ ॥ अ त पे व कु रा ना द या कु र्ते ति स ग र ॥ आ दि म धा व साने पु न ते या स्य ति
वि क्रि या ॥ ६२ ॥ नि अ य ग रि के न कु ल व त द या वत न दि रि ग रि आ न र आ दि म धा अ त वि क्रि त ग न्या पे ला
लार् न दारि गनु ॥ ॥ प दि ते पु गु न स चो मु र्य दो षा तु के व ता ॥ त ह्मा मु र्य स रु अ न प्रा त पे क प्र स स्य ते
॥ ६३ ॥ गु ण व त वि व स न ये अ उ ण दो ष के हि षे न मु र्य दू उ अ ने क दो ष हो ला पे लै प रि का र न ते मु र्य रु

जार गोता कूडि पुन वत पे क ता रो ज नु ॥ ॥ प्राज्ञा प्रियो य माने तु संत राज्ञो ह्यो यो गुण ॥ य स्य स र्ज
 नी वा स च पु करे च ध नाग म ॥ ६७ ॥ ज्ञानिव ते स ग पि ति ग या को ति न गु ए ज स क्रि ति लु क्त्वा व धि च्छ र्ग वा स
 ध न हो सा ॥ ॥ सु र्य नि जो ज्य माने तु त्रि यो दोषा न हि प ते ॥ अथ स वा य ना स अ न र के प त न क र व ॥ ६८ ॥
 सु र्य स ग पि ति ग या को र जा लाई ति न दो ष हो ता अ प क ति हो ता लु क्त्वा न व क्ष ता प र त्र न र क वा स हो ता
 ॥ ॥ त स्मा नु भि च रो नि त्वा ध र्म का मा र्ग व द य ॥ गु ण व त नि यो य ते गु ण हि नं वि व जि ता ॥ ६९ ॥ जो हा
 रा जा ते ध र्म अ र्थ का म हे रि डे जी ग तु पु न व त स ग पि ति ग नु प को गु ण हि न प्र या को हो रा द्वा द नु प य ॥ ॥
 य त्किं वि डु र ते म त्प सु च वा य दि वा अ न ॥ ते न सं व द ते रा जा लु क्त्वा ते दू क्त्वा ते ल पि ॥ ७० ॥ कु ल व त ता नि
 त त स ग मि त्र ग या अ ने ग य अ न न या प नि अ न रु द्ध प ले प रि का र स ग लु मा नि स स ग पि ति ग

10

या रा जा को सु र ति रु द्ध ॥ ॥ य था हे म प रि अ ते ता प ता ड न डे ड ते ॥ त था ए रू ष म य वं कु त सी ल न क
 र्म ते ॥ ७१ ॥ न म्हे हे म सो वर्ण को प रि ण त द नं त लाई व रु ते ता द ना न ग नु जो र्दु नु ध र मि रु द्ध कु त शि त ता न
 पु न ध र्म प नि अ धि न त त्क न नि गु नि न नु प न त्र न र क वा स हो ता ॥ ॥ ज्ञा त व पु अ ने च्छ ता वा भ वा
 व स ना ग मे ॥ आप त का ले त था मि त्रं जा ज्वा अ वि न व स य ॥ ७२ ॥ आ फु व णा को स रु र मा दा ज्यु माई सो हि त हे रु
 नु के हि का र्थ प था उ दा हे त हे री प यो उ नु आ फ ना आ प दा सा प नि हे त हे रि र्द मि त्र दा ज्यु माई को हि त हे रु
 नु ॥ ॥ च्छ ता व रु पि धा रा जा नु त मा ध र्म म थ मा ॥ ते नि यो ज्ञा नि यो जो ता त्रि वि धा व व क र्म स ॥ ७३ ॥ आ
 फु व णा को स रु र मा को आ द मि नि को न नि को हे नु न नि को मा नि स न या को द दि दि नु जो हा आ फ नो क र्म नै
 क न ते ता उ ला ता हा ता हा जा ला ॥ ॥ आ र स पू र व तं कु तं त ध व श नि न स य ॥ अ थं तु स म न रं य त्प

जैतु त्वनराधिप ॥ १७ ॥ आफना मित्र जयापनि कोहि नयापनि अत विवशनि अंतोषि तत्तामानिह
 लारि राजाले दनु पयो हो या प्रात आफरा जानि दया जयापनि पाहा रुद्धि होला ॥ ॥ तेजे स्वाभिनमो
 तुग्र अतुग्र रुप न तजे ॥ रुप न दविश वरु तस पावक तनो सन ॥ १८ ॥ आफरा जानि दया जयादे
 विदो दनु योरा जा रुप नि जया कार्य नि को न नि को विचार गरि राजा जयापनि हो दनु ॥ ॥ वास जयापनि ॥
 मुरी प्रेस को वागि वार क ॥ निटै हो वंशु वरु तजे दया सहुत दुष ॥ १९ ॥ जये आफरा वाउ से पूछा त पूछा
 जे सहे ते सज न जयापनि मूरि होरा नयापनि आफना कार्य लाग्या मी जयापनि पैला मानि सहुत
 पयो ॥ ॥ न कछि कस विमित्र न कछि कस विप्रिया कारना दे वजाय ते मित्रानि विप द तया ॥ २० ॥ मित्र गने

कारण तेहु क मित्र पनि शत्रु पाने कारन तेहु दुषे ल कारन ते जान गुण विवत संग मित्र गनु ॥ ॥ कार्य विच
 जने रोका न रोके पर पावक ॥ वला अर संय दृष्टा परि न जति पातल ॥ २१ ॥ कर्ज कन लोक स पल ते सज
 नाग दु विना कार्य को लार कोहि न जे दैन क लो परि कार ते पनि जान गुण न न्याज सि गरि वा द ते दूद सानु
 न पाय ज लो त लो परि कार हो ॥ ॥ कु तो वे स नि नो निद्रा अत त स कु तोर नि ॥ कु तो सौ ष ड वि ड स
 दु जन स कु ते स मा ॥ २२ ॥ य स्या मी को निद्रा दु दैन त पवि कोर नि दु दैन गरि प कंगाल को सुष दु दैन
 दु जन को स मा दु दैन त लो कारन ते जान वत गुन वत संग गनु मित्र जानि को स लो कु दैन ॥ ॥
 त हार स कु तो मान्य दूर्जन स कु ते स मा य स्या मी ना कु ते हो कु ते स लो का मिना ॥ २३ ॥ चोर को स ल

आहुदै नहु जनको अमाहुदै न बसा श्रीकोटो हुकराहुदै न काभिदे उ सत्तुहुकराहुदै न ॥ दुर्वल
सवलो राजा वाता नारो दितं वलं वलं मूर्य सप्तो नत्त वौराना मन्त ते वल ॥ ८१ ॥ गरिपको वरराजा वा
तषको वल लौ दनु मूर्यको वल नवोतनु वौलको वल रात्री मावरगन्या ॥ ॥ अनाथा नाद रिडानां वा
लवृद्धि तपस्वीना ॥ अथ परिनुतानां सदेवा पाथिवोगति ॥ ८२ ॥ गतिमको कुरोगहु उ रिडको गति उ
टा को गति तपस्विको गति अन्यायको गति ऐतिचार्यो कगति राजानपहो ॥ ॥ वाचित सवहिनस्य
सत्रु मित्रा दित सव दूदयस्य कदयस्य सुहृद सनौषध ॥ ८३ ॥ वाधिते अनेक जन्म गरिये
रिनासा को माहाफेरि द्वाहुते पनि बुक्ति गरि सासगत तसै विवमाहा कोहि पुरुष तेयो सत्रुको नास गरि

दियो तसै पशुकार ते राजा को वारमाहा सप्तानमाहा वसु विना ज्ञान गुण न न पाहुदै न ॥ ८४ ॥ जाव सुद्धि म
नुष्या ना ज्ञान सर्व कर्म सु ॥ जावे ननु विता काता जावे नहु रिता नना ॥ ॥ कोहि मनुष्यको सर्व कर्म सप्त
जाव ते गच्छ श्रीकोटु वनपति जाव ते गच्छ जाव पति न जया केहि देन ॥ ॥ नदे वो विद्ये ते काहे पाषा
ने न च मृगया ॥ जावे पु विद्ये ते देवो तस्मात्ता वो महातर ॥ ८५ ॥ मनु अते देवता दू सनि विदित अन्तर गाई लोका वा
रते असाव दू उदु धुगा मापनि लोक मापनिका दू मूर्ति मापनि देवता दै ननु जस ते पै कबिते ते देव
ता को मूर्ति विदित ते देवता वाहि अउ दुनू ॥ ॥ विष्णु ना देवता वायं ज्ञान मा वायं देवता ॥ देवता
योषिता नत्ता वा लोको न देवता ॥ ८६ ॥ मनु अको देवता नयो गुण गुण को देवता नयो ज्ञान श्रीको देवता

नयोपुरुष लोकसमस्तको देवता नयो वेदाव्यवस्था ॥ ॥ विपुलस्य यथावर्हि व्याचार्यपस्य देवता ॥ पृथ्वीपः
राजयाभाता मित्रपस्य जया सुत ॥ ॥ देवता जलो वास न जया अग्निजलो गुरु न जया स्वर्गजलो वावा जया
पृथ्वीजलो नरु तारा जया मित्रजलो पुत्र जया ॥ ॥ गुरुतग्निदिजातिनां वर्णाता वास नो गुरु ॥ पतिरेको गुरु
स्त्रीनां सर्वस्या गता गतो गुरु ॥ ॥ उत्तमजाती जया पति निचजाति जया पति वासनका गुरु जया अग्निदेवता
देवता को गुरु वेदाव्यवस्था श्रीका गुरु जया पुतिपुता समस्तका गुरु जया अगता ॥ ॥ उत्तमस्यापि
वर्नस्य निचो पि गुरु भागता पुजेनिया तवा न्याय सर्वस्या गता गतो गुरु ॥ ॥ उत्तमजाति जया पति निचजा
ति जया पति अगता गते पै पल आउ न्या सार देवता उजा गता जलो भातु नमस्का न ले सुउ को उजा गनु ॥
दिन का दिन न्या उ न्या सार दिना को व दो पु न्या विन तलो परिकारुति न अगता गत गुरु पानु ॥ ॥

देवता उजा गत ता न्या सार न उ जय ॥ सुउ पु जो पकारे न विप्राणां मनीषं देव ॥ ॥ देवता उजा गतु न
तिन नमस्का ले सुउ को उजा गनु चित्त गन सगा ॥ ॥ धर्मस्य मूलराजानां तु पमूलं वास न ॥ वासनाय उजा
ते तत्र धर्मसनातन ॥ ॥ धर्मको मूलराजा तपको मूल वास वासन सार जति उजा गनु सको तति उ न्य रुद्रे
॥ ॥ जो जो जो फेले प्रीति प्रीति प्रीति प्रीति प्रीति ॥ आचार्य फेले धर्म जयाचार्य पर ते धन ॥ आचार्य पर
मा प्रीति आचार्य ह तर जना ॥ ॥ असका घर मा अगार गद ते सका घर मा हा लक्ष्मी वा सग दैन संसर्ग
गया को घर मा हा धर्म ले प निवा सग दैन धर्म लक्ष्मी उ वैज लो घर वा सग गया को द तस्कन निवा हा द दैन ज ह
ले आचार ग दैन ते सका घर मा हा लक्ष्मी वा सग दैन लक्ष्मी न मया को घर मा हा उ हो ला तलो परिकार ले
आवा सगनु पद ॥ ॥ जो जो जो ज न शक्ति रति सक्ति वर श्री या विन वो साने शक्ति वना स्य सतप

सफल ॥ ॥ वानु सकला को पुन जो र्या र्थ न यो रति सा मर्य को दिव्य ली सुन्दरी न यो धन रुन्हा को दान पुन
 उजाग नु न यो दान पुन ग ग्यात पणि ग ग्या को पुन पार्इ ॥ ॥ वाते वे व व ले धर्म पणि न वृत्ति जी
 तं ॥ फल ना मणि पे काना सा खत पतन न वे ॥ ॥ ॥ समस्त स सार ले वात व को धर्म व रुति ग ले अध र्मा रुति ग
 नु है न कला ने न्या ज तो गरी फल पु ल पा का को दु दु स म ल लो के हे रुता ई वा धि दि दु त ले परी कार को
 धर्म हो ॥ ॥ स द न व ह तो धर्म क्रो ध नै व रु ते त प ॥ अ द रे व रु ते ज्ञाने प्र सा दे न रु ते दु तं ॥ ॥ ॥
 अ रु का रि न या प दि ग ग्या को धर्म वे र जा दु क्रो वि न या दे वि त प सा को ना स रु दु अ सि दि न या दे
 वि ता न वे ल जा ला अ प्र सा दि न या दे वि सु न्या को सा अ वे ल जा ला ॥ ॥ अ दि त ग्री हे तो हो म रु ता
 लु कि न सा वि का उप जी वा रु तो क न्या खा वे पा क क्रिया रु ता ॥ ॥ ॥ अ पु न व सि क न ग ग्या को हो म

१४

जत वे ल जा दु गायु को ग र त न नै क न जो ज न ग ग्या को जो ज न वे र जा दु वा वा म रु ता री रे ज्ञान पु न अ
 ति उ धि न दि या के न्या वे ल जा दु द न लु के दान पु न न ग ग्या ध न वे ल जा ला ॥ ॥ दारि दु वा धि दु षा निः
 व न्न न व स ना नि वा वे दा लु फल नै ता नि त सा द न वि से वे ते ॥ ॥ ॥ अ धि क र्म ग ग्या को दु वा धि का र्ज न को
 ध न ना स हो ला जो वि रा ना श्री ग ग्या ग द्य वि रा ना जि य ध न री न ग द्य त ल्क न रा जा को व ध न प ता ज स ले दान पु न
 ग ग्या को दु ने त ल्को ध न ना स हो ला त ल्को उप कार दान पु न ग ग्या दे वि प र त्र सा हा सु व हो ला ॥ ॥ पु ल का ई व
 धा न्य पु पु ष प दा ई व जं तु पु ॥ ता द स ल म नु ष पु ये व ध र्म व हि रु ता ॥ ॥ ॥ को हि पु रू ष को ज्ञान पु न ध र्म
 ग नु म न आ पी न दा त रु त्वा ज लो व र्य हो ला य सा बा र पो रु त ले दे वि पा प दो ष सा हा द्ये दु ग ता त प नि को हि न या
 प नि ये ति दु व हो ला ॥ ॥ त्व र्ज उ र्ज न सं स र्ग न ज स उ ह मा ग म ॥ ऊ र्य पु न्य म हो रा त्र स्म रं नि त्र म नि त्र ता ॥

जहूँ पैला ससार माह दूह दूह नद्विध धर्मिष्ठ सग सगनु पता देन रात्री गर धर्म वित्त गर्नु पता ॥ **॥ रात्रि रा**
 न क्य वार सगुहे पु य स सत क स मा फ ॥ **॥ सा** आर्य व शुषा विप्रा नरेन्द्रा नाति व शुषा ॥ वे दार्थ व शु
 षा विप्रा र्त्त राचार व शुषा ॥ **॥ १ ॥** साछा को आं न न्या को वा सने हो राजा को व्याषा न न्या को न्याय नि ति मा
 हेनु हो वा स ए को व्याषा न न्या को वे द हो स म सरो क को व्याषा न न्या को स म स न्या न मा जा चनु
 ॥ **॥** राजा धर्म नि ध म न पापे पाप स मा गे मः ॥ राजा न दू नि व ति सां य चारा जा त या पु जा ॥ **॥ २ ॥**
 राजा धर्मिष्ठ न या पु जा प नि स म ल धर्मिष्ठ दु दु राजा पापिष्ठ न या स म स पु जा पापिष्ठ दु दु
 राजा दु धि न या पु जा प नि दू धि दु दु राजा क सा दु दु पु जा प नि त लै दु दु ॥ **॥ ३ ॥** उ म
 सा ह स धै र्य वर दु धि प रा क्र मः ॥ स द ते ज त्र ति क्ष ति त त्र दे वो पि स क त ॥ **॥ ४ ॥** को र्त्त मानु स न या

पनि उ म म दु न्या सा ह य दु न्या धी ज ग नु स क न्या व ल दु न्या वू धि दु न्या प रा क र्म ग नु स क न्या पै ति दू
 यो र क ला म ते दु न्या म नु स दे वि दे व ता को प नि दू ल उ दु ॥ **॥** सा म्य दाने न नै दे न क्र मे न च वे र न च
 स र्ग सु स दा स दू द्या त नि यो त र धि ॥ **॥ ४ ॥** को ही प्र व ते राजा ते स नु स ग सा मे ल नै नै क जु ति को हि
 प रि का न सि त का र्य ग नु जा व लु सो दु न्या उ दू **॥** स द ग नु राजा ते पै ला उ प का र ग री क न स नु दू द नु ग नु ॥ **॥**
 पा त्रे त्ता गी पु णे रा गी सो ज ने प रि ज नै स ह ॥ सा लै वो धा र ने यो धा नृ प त्प प व ल अ न ॥ **॥ ५ ॥** को हि पु नू ष राजा
 लै सु का र्य मा ह ध र्म मा हार स ग नु उ प त्तो ग मा ह उ प त्तो ग ग नु आ फ्रा प रि वा र ता र्त्त स नु स ग रा र्त्त स नु
 स न्ना मा हार स ग नु र्ण मा ह क्रा धो दु नु पै ति प रि का र ले आ फ नु कुरो धि क नु प दू ॥ **॥ ६ ॥** उ त्त म प्र नि पा ते
 न उ र ते दे न यो ज य ॥ रु ध म र्थ प्र दा ने न स म नु स प रा क्र म ॥ **॥ ७ ॥** उ त्त म मानु स ते त ग नु न म ल्का ते दु दू

सुन्यासित कार्यगनु नेदल दुद्ध लोनीसीत कासगनु दासले दुद्ध सत्रु सग कासगनु नेदतर रुले दुद्ध
॥ ॥ आजादिउ पले दया विद्यादिउ परया ॥ गहेऊ मई वागानि पर जाव वर संया ॥ ॥ आफुनु द
ष परालाई नदिनु पराई कादूषे पनि आफुले नुतिनु जसागरीहिउ दामा हाक सुवालु कुद्ध तेसै परि कारधि
ते धर्मरुहिरुद्ध ॥ ॥ मन सावितय कार्य वचसान पुकासया ॥ मत्रल अननु धात्ता कार्यहिदि
श्रजायते ॥ ॥ ॥ कोहा कार्यगनु मनहे विनाया कोगनु कार्यहिधनै केन कार्य सीधनने या सप्तव
वन कुरा प्रकासनगनु कोह सत्रु नयापनि सत्रु को सत्रु नयापनि सत्रु को उपकारगनु कस्तो मने
देवि काठो विजा को वन को काठो तिजिकनु ॥ ॥ उपकार गहे तेन सत्रुना सत्रु मयहे पाउलगकर
लेन के पकेने वकथका ॥ ॥ उपकारगनु काहि शत्रु नयापनि शत्रु को शत्रु नयापनि शत्रु को उपकार

१५

गनु कस्तो नया देवि काठो विजा को वन को काठो ले तिजिकनु ॥ ॥ वहे वमित्र के घेन यावत्काल
विपर्जयत ॥ तथै वमागते काहे विद्या घन भिवातिनि ॥ ॥ आपदा विपत्ति सा शत्रु लाई पनि क्रोध मो न
हाई हिडा लेनु आफा मुदिन मा हा तो शत्रु लाई धुगा मा पछा रिमार्नु शत्रु लाई ॥ ॥ हे जिवो कतु के ये हे
मधुर किन नाषते ॥ मधुर वदसि कल्यानि रोकार मधुर उने ॥ ॥ हे जिहादिउ वचने वान गद्ध सत्रुधर्म
वचन गथा देवि सप्त लोक सपुतिगला ॥ ॥ जिहाग वचते लक्ष्मी जीहाग मित्र वाधवा ॥ जिहागे वंश न
स्यापि जिहाग मरन प्रवं ॥ ॥ मित्र दुद्ध तपनि जिहाते लक्ष्मी वंश ले दुद्ध तपनि जिहाते दान्यु भार ईष्टमि
त्र दुद्ध तपनि जिहाते शत्रु लेना सगद्ध तपनि जिहाते ॥ ॥ प्रिय वाक्य पशनेन सर्वतु कति जेतवा ॥ तस्मा
तदेव ज्ञाते वं किवा कानेद रिडता ॥ ॥ कोहि पुरुष ते प्रिय वाक्य गथा देवि सप्त लोक संतुष्टु दुद्ध ते लोए

निवचनगयादेविदेवतापनि संतुष्टुं ते सि प्रीती वचनयादेवि दमिपनि दुंदैन ॥ ॥ अग्निदोगरं
 चैव, सल्लपनिधनपहा ॥ भद्ररागपहा विव, वरने आतताईना ॥ ॥ कोहि उरु, वलेवनपहा उधाराताउ
 न्या, पुरुषलाई विषुवाउना, सल्लतें प्रहारागना, पर श्रीचौरना, परधनचौरना रूतवेचौरननु ॥ ॥
 आततायिनमायाति सपिदेदातपारग ॥ जियासतजियाहिया नतेनउल्लहानेवो ॥ ॥ आत्तरु ११
 त्यागना, अजसकुरागंन्या विरानाजिवयातगना वारुननयापनिकोहीनेयापनि बाणसचनु ॥
 ॥ एषपारयतेनित्यं, नित्यधर्मपरायन ॥ निजितपरहै न्यानिपतिधर्मनपातयता ॥ ॥ कोहि उरु, वलेरजाको
 दरवाजा जोनिताजा उरु, सत्यधर्मनिति अनिति को विस्तारपनि उरुला वेहुतलोकसगपनिपतिग रि
 न्यायधर्मका निति वपनि उरुला ॥ ॥ पुषुपुषु विविधिके भूले अने नकारयः ॥ माताका लई वागानि जया

जानाति सरति ॥ १७ ॥ राजाको अकुसलन्या मालीनी को फुलगाथा कता कोहि उरु, वको दोरीनयो लीनयो के
 हिने दसित फुल रिदिनु आयादे विनि अयंकरे कगनला, ननि उरुनु, तले अर्थराजाको अकुसलये ॥ ॥
 अनायययकतार, अनार्यकलरुपीया ॥ अहोसर्वनभिर, नरसिधुविन ह्यति ॥ ॥ अतहकमाला विरानाती
 तरुगरागनु, अतहकमाला पराई को धन सतिग रिदिनु, आतुपयातनि मने किन दराउनु, मनकि नोगलाये
 ननि के सैलेनषाया को ससंषानु, बायादे वियोमानि को जन्मपाया को विकार्यवेतजाला ॥ ॥ ककारका
 निमित्रानि को देखको ययाग ॥ कस्याहंकाचने सकि रिति विना मुहु मुहु ॥ ॥ राजाराजाते निदानगह
 कार्यदेवतपहा कावो लुहु, को आउरु को जाउरु, आपुले नला नोको कासाहद जानाको डोरोकाहद
 योचितना वारं वारंगनु ॥ ॥ अविमित्रमुहासिन, मध्यस्थ, यविरोरु ॥ योनउधति मंदांता, सचमवत्रनस्य

ति॥ १० ॥ कोहिउसले आसपासनहे रियोलादे विराजान नया कोदेस माला व स्याक ज सोहुदू क सो नयादे
 वि श्रित्त मित्र नयादे वि हाट लखा होला पराई को दासि पेनि होला आपु व स्याको जगा मध्य तारु वंशु सित्त पनि विरो
 धगती गुप्त सित्त पनि विरोध गती जये आपु नु पराई स र्चत्रको आत्मा बुझला ॥ ॥ सिंहादे कं व कादे कं सिष
 वत्तारि कुकुता ॥ वायसा पच सिष ते षट गुण त्रीना ग द नी ॥ ११ ॥ सिंहादे के क गु न रिनु व कु ला को पै क गु
 न रिनु कुसु रा को चार गु न रिनु काग को पा च गु न रिनु कु कु रा को छ गु न रिनु ग द रा को ति न गु न रिनु ऐति
 जात को गुण मनु स ले रिनु ॥ ॥ अचुत कार्य म ल्या यो न र क तु मिदू ति ॥ संघाते ते पु त का ते सिंहादे कं
 विधियत ॥ १२ ॥ आपु ले ग न्या कार्य ज्ञा य कै का ज नया प नित्त तु विर सित्त ग नु यो कार्य सिंहा को रिनु ॥ ॥
 इन्द्रियो नित्तु संयम व क व पां दे तो न र ॥ कार्य करी प पु नानि स र्च कार्य नि सा व य ॥ १३ ॥ व कु ले ज सो ज्ञानि

10

आपु कार्य नें उ डु दा स र्च प च इन्द्रि वा धिरा पु न्या आपु कार्य गु णा प्रात के रि कार्य नया प नित्त सि पु ग रिग
 नु ऐति पै क गु ण व कु ला को रिनु सि क न ॥ ॥ प्रात स्थान व सु चं स विज्ञा ग द व भुषु ॥ स्त्रिय सा क्र म्य तु जित्त
 सिष वत्तारि कुकुता ॥ ॥ प्रात काल विवे स वे ल स उ र नु क्रा तु स ग यू र्क ग नु आपु ता वंशु सित्त सा रु सित्त सा रु
 रिनु श्री स ग यो धा डु नु ऐ स चार गु न कु कु रा दे उ सि क नु ॥ ॥ ग र ट पै लु न धृ व त्व को चाले य स ग रे ॥ अप
 सादि स ह ह व प च सिष व वा य हा ॥ १४ ॥ मै लु न विष गु ध रं वे ला ग नु वे ला विष व धु सित्त व ह्यु प सादि नु र नु
 पै ति पा च गु ण का क दे उ सि क नु ॥ ॥ व ह्रा सि वा स य त र सु नि नु सि पु वे त न ॥ स्वा मि न क थ म्बर अ ष द
 नै स्या न तो गु णा ॥ १५ ॥ नया टे रि सा नु न नया यो पि ले स उ र नु यि पु ले नि नु ग नु सि पु ले उ व नु सु र नु
 स्वा मि न क त्त ग नु पै ति दू यो क गु ण कु कु दे उ सि क नु ॥ ॥ अं वि ज्ञा त व रे तार सि तो ह व न वि न्नि ॥ सु स तु

सेनवेनित्त, प्रितितिखवगई जा ॥ २१ ॥ आपुले गवा को कार्य सिद्धं ज्वाले स म्माया स म्माया, सिते ता तो न स
 क न्ना यो रि ले स न्नु दु न्ना ऐति ति न गु न ग म्मा हा डे उ सिके नु ॥ ॥ विसत्ता ना गुण पो ता ऐ लु कार्य दि व म्म
 स जे यो ति रि पु स र्वा ने ज य नि च वि ष ति ॥ २२ ॥ ऐति वि स यो क गुण ज म्मा ज्ञा न्ना को र्म स म्म ल्ले स म्म क ने डे
 न ग र ला ऐ ल्मा म्मा नि स क ने क यै ले आ फु न्नु स कै न ॥ ॥ अ म्मा ज्ञो म्मा न्ना म्मा स प स न्नु पु रे ते सा ॥ प
 र म्मा र्प का ते न पु सा न व नि वि ग र ॥ २३ ॥ म्मा ज्ञे न दु न्ना ज्ञा ने तो क ते दि उ व र न म न ले प नि वि ता उ न्नु
 प नि डे न अ क ते रु ष दि या मा हा प र म्मा र्म ज न को वि ग र ॥ ॥ ऐ को र्म र्म य ग्मा य ये र ति
 मा हा र्म वे ॥ अ सा वि ता वि न स नि नै र्म दार् व पं सि न ॥ २४ ॥ न न्नु लु पा मि वि या को हि दि न्ना मा हा र्म
 रा ग रि क ने ऐ क ति न ते वि ष षा या डे र्म को पा न ग यो यो ते ल्म अ र्थ ले ग म न म्मा ज्ञे र्म ग न्नु ॥ ॥ अ स न

न्ना र्म ग रे ना ति, सु नि व प रि ग जि ता ॥ त स्य सि द्धि ति ग त्रा नि प मि नि व हि मा ग ते ॥ २५ ॥ को हि पु र्म को
 ली कु कु र्म न्नु क म्मा र्म हि न्नु कु र्म स यै र्म ग र म्मा लो पु र्म को स र्म अ ति दु रि हो ला क लो स न्ना दे वि शि
 शि र म्मा र्म को प म्मा लु का ज लो ग रि मु क्ता ॥ ॥ य स्य ग रे लु न्ना र्म च म्मा ते व हि त का र्म नी ॥ व र्म ते त स्य ग
 त्रा नि लु क्प अ य चा स सी ॥ २६ ॥ को हि पु र्म का ली म्मा र्म ले हो न ग म्मा ज लो हि त ग र्म लो पु र्म को
 स रि त दि न दि न लु क्प अ को र्म न्नु मा को ज लो ते ज हो ला ॥ ॥ किं जा ते व र्म नि पु र्म लो क स ता प का
 र कै ॥ व र्म ते क कु ला ले वी य त्र वि म्मा म य ते कु ल ॥ २७ ॥ र्म रि र्म र्म म्मा ले का दु र्म लो क स ता प म्मा त्री
 रा उ र्म आ फु र्म ग र्म र्म आ फु र्म कु ल मा हा व र्म ता नि व र्म त यो ऐ कै र्म र्म ले प नि डे र्म ॥ ॥ ऐ क न्ना र्म
 त्री यो पु र्म द्वा र्म र्म स यै न वा ॥ क न्ना का लो व साने पि न ते य स्य ति वि क्रि या ॥ २८ ॥ ऐ क ली ति न र्म र्म

दशदुतिगार्, पद्धि वात पेक दोरी पेति परिकार जलोद्धि कारमा मनु द्वेन ॥ ॥ ऐक्यावरु पुत्रा
 गय मेको जदिवुजे ॥ यजतया स्व मे धेन नील वा र व सु सजे ॥ ॥ घे रिद्धोरा जयापनि कदाचित पे क दोरा
 गया जाला अस्व मे ध जत ग या नित ग ल पा या ज को पु न्य पा उ ता ॥ ॥ ऐ के न मु के वे से न द ह्य माने न
 वहिना ॥ हं ह्य ते त ध नं सर्व उ पु त्रे न कु लं य चा ॥ ॥ मु का को पे क रू स मा हा आ गो ला दा से वे व न ॥ २९
 उ र्द ह्य य सै अ र्थ ते आ फ्रा कु ल मा हा कु पु त्र दो रा ज न्या कु ल ज ल उ द्ध ॥ ॥ ऐ के ना पि र अ काना
 पु ष्य ते न मु ग धि ना ॥ वा स ते त ध नं सर्व सु पु त्रे न कु लं य चा ॥ ॥ ता हा प्रा ते को हि व न मा हा मु द अ फ
 ल न्या को धि यो उ हि फु ल को वा स ना ते से वे व न मा हा वा स ना र या त सै परा कार ते कु ल मा हा पे के र उ
 त्र दो या ले ज न्या दे वि कु ल पु स सा ग द्ध ॥ ॥ य स्य पू त्रो व हा न्या ला यो कु न नु गा मि नि ॥ वि न वे ष

या धि ते पा उ न्या मूर्ख अज्ञानि अर का को चर मा हा व द्धा अर्क को से वा ग न्या र्पा च ज ना जि व दि प्र या को
 अ ति दु वि न नु ॥ ॥ स्थु र ज ये य दा रा म ल क्म ण स द्ग मि नि ॥ प्र के सि य दा सि ता त दा ते दु ष र्ता गी नी ॥ ॥
 पा उ ता वा धि या रा म जि उ को ल क्म न हि द्रा को रा द्धु तो न यो सि ता को के स व धि या ऐ ले अ ल स ण ते र्नि न
 ज ना दू वि न यो थो ॥ ॥ यो य त्र नि त्त मा या ति नू क वा पि दि ने दि ने ॥ स ते त्र ल यु ता या ति यदि द्र क्रो स मो न र
 ॥ ॥ का हि म नु अ ग ण दि वि ष्व वे तो न हे रि के न वा न मा त्रे खे ज नु यो म नु अ ई नु ते उ रू ष न या प नि प दि उ
 नि ड हो ला ॥ ॥ प र्वा न्न पर व स्त्र व पर पा न पर ली य ॥ पर स्वर गृ ह वो स स क्र स्था पि त मो न र ॥ ॥ परा यु को
 अ र्च वा या परा ई को व ज्ञ ला या परा धि पा प ग न्या नि त्त परा ई को चर मा वा स ग न्या र्पु रू ष ई न स मा न न या प नि
 ल क्म णु दे न ॥ ॥ अ हि र न म दा से क गृ हे गो ता स र्व जि ता ॥ प ति कु ल कर त्र च न र क णा प रो वि धि ॥ ॥ १ ॥ सु

वर्त्तन नया को बाउ, नि को व लिन नया को बाउ गोर स न नया को बाउ ली को व स्या नया को बाउ पेला बाउ
 बुद्धि है न नर क नेनु ॥ अशौ को नि धनो वि दान नौ को पुत्र वाने ॥ अशौ को वि धवाना पुत्र पौत्र
 नि धित ॥ १२ ॥ सा ल को ध धान ग न्या पणि तु अ सु वि पुत्र न नया पु सु अ सु वि हो राना ति न नया अ अ
 अ सु वि दु ॥ ॥ वि न य सर्व पू ज्य ते न स रि स न दे हि ना ॥ चा ए रा रो पि न र से लो य स्या ति वि पु लं ध न ॥
 १३ ॥ स म ल लो क ले ध न सा ३ उ जा ग दु ने, स रि रू हे रि हो र न ध न न या दे वि क से बा डा त न या प नि उ त
 म ले प नि उ जा ग दु ने ॥ ॥ ध न मा दु पर ध मा ध ने स र्व पं ति चि ता ॥ जि व ति ध नि नौ लो के मृ ता
 य त्व ध ना नि वा ॥ १४ ॥ उ य ज सो बु लो को हि है न ध र्म ग नु स म ल प ति पा त ग नु ध न रु न्या म नु
 म जि या को न नु ध न रु त नि अ रु क न रा ष न दि न्या के न नाना न य हो ला ॥ ॥ अ ति स प द न प त न जे त व प त

२१
 २९

ना न य ॥ अ त्म अ सि ष रा र्ध स त्व उ जो न पा ति ता ॥ १५ ॥ अ ति स प ति रु न्या को को ति न य दु द क से न न या दे वि
 उ वा र्ध न वि ष य उ प न्या ज हि तं सै प रि का र ति त स प ति रु न्या को ना स हो ला ॥ ॥ को न स न स को ति तं को सु षा
 नि व रो गी ना ॥ य स्य नो र्था त्व स नु षा को र त स्यो स व ग हे ॥ १६ ॥ गु नि न गु नि बा या दे वि रोगी को सु षु दु द न ली स ग
 सं तु ष न न या दे वि य र को सो ज्ञा रु दै न ॥ ॥ सौ न स क र्म को ति तं सु ष नि त म रोगी ना ॥ नो र्था न तु व सा य स न स नि
 त स व ग हे ॥ १७ ॥ गु नि व सु षा या दे वि रोगी को वे यानि को रु द ली अ प्रा व स्य ना व स्या कि न या य र ना सो ना रु
 दै ॥ ॥ स र्व प रं व सं दू रं स र्व ना त्व सं सु ष ॥ पे त वि श्या स मा स्य न स भ न दू ष सु ष यो ॥ १८ ॥ अ का को व स्य
 मा हा व स्य प न्या दू ष न नु अ प्रा व स्य मा हा अ रु रा ष नु स का उ रु ष न नु सु ष दु ष को ल न न पै ले हो ॥
 सु ष स्य न त रं दु षं दू ष स्य न त र सु ष ॥ सु र दू ष म नु षा ता व क्र व प रि व त तै ॥ १९ ॥ सु र को अ त र मा हा दू

[illegible]

नति॥ मूचातृनां निधाय ते पुञ्जी तै कुसुमै सह ॥ ५३ ॥ उत्तमजनसगगया देषिननि कोपनि उत्तमपु
 रुकलो परीकाल ते नया देषि कुसुमको फुलसित वास सितं गाला उरा वा सपनि सो जा रुद्ध ते लो हो ॥
 किं करिष्यति स पके सो जा वो उरति क्रम ॥ पस्याम फल मध्व कषायो नास तागति ॥ ५४ ॥ सो जाई फेरिनु
 स वा नि को सिते व सनाले कागनु रुद्ध अम्य सित व त्या को अम्य को उ ला उ वै न यो अम्य का स वा द ज लो नै के
 कने ते लो सो जा व फेरु न स वा का रुद्ध ॥ ॥ स करा व हु ग धे न म ध्व नि म्य पु ति थि ता ॥ म ध्व नि र स मा वृ क्षिः
 नि म्य कि म धुराय ते ॥ ५५ ॥ यिनि को पुषा ल वे नाई जाऊ सो नि म्य रो प नु यो नि म्य द न दू ग्ध को पा ति वे
 हा द ग नु गु ति यो रु दै न ति तो को ति तो रु द न मै आ फ नु सो जा व रुद्ध ॥ ॥ पु ल के पु य या वि या
 पर रु लो पु य धने ॥ का र्य का ले उ स पा पे न सा वि या न ते धने ॥ ५६ ॥ पु ल के मा रु ले वि रा था को वि या प

रंतलं॥ १५॥ कसको कुलमा दोष है न वेया कसलाई है न कसै ते दोष जा है न संपत्ति कस्को व्यापु चोर है
 न॥ ॥ दोषायति गुणायति निगुणो षोपे जायते॥ सुकुमालस्य पयसा नारो न वेति कंकशा॥ १६॥ दुषनया
 पतिन नया जलोगर्भ को मल के मल सै लरुनु॥ ॥ अमृतं शिशिले वद्वि अमृतं शिरसो जत॥ अमृतं गुणव
 त्तितार्था अमृतं वातनासितं॥ १७॥ शिशिरुका लको अमृतं अग्नि हो शिरसित को तो जने अमृतं हो
 गुणवतल्लि अमृतं हो वातस को वचन अमृतं हो॥ ॥ उल्ला प्रकृतिवर्ति उल्ल न सुअमापुनु॥ उल्ला नय
 सुह नारी उल्ल न वचनं प्रीया॥ १८॥ उल्ल न नयो स मरुत वचन उल्ल न नयो स मा वत्तरा जा उल्ल न नयो
 माया कि ली उल्ल न या प्रिया कि वचन॥ ॥ नदीनां जाह्नवि श्रेष्ठ नारी नार प्रतियुता॥ मनुष्यानां नृपो रा
 जा या दु दे सानां यत्र निवृत्ति॥ १९॥ नदी मा शृङ्गा रुवि गंगा श्री मध्या श्रेष्ठ प्रतियुता मनुष्य मध्या श्रेष्ठ

२४

राजा है स मध्या श्रेष्ठ व्यापु वत्सा को राउ रुद्ध॥ ॥ उग्र पौत्र स मा किर्ण दासि दास स मा कुलं॥ नार्थ विरही
 तं गुयां यचार न्यत वा गृहे॥ २०॥ दोशनाति दाति अने कपद रिचन यापनि श्री न नया दे विचर नया पतिव
 न जल्लो हो॥ ॥ सचे वां ते वर नाना श्री योरत्न मनु त म त स्मार्च दे र नितं या ता व त्य का धने र पि॥ २१॥
 ॥ स म स्तरत्न मध्या श्री श्रेष्ठ ऐ लो परी कार ते ली न न या ड व ते का ग दु॥ ॥ कुल्लि रुती कुतु वानि कुपुत्र
 कुल्ले रु न्य ते॥ कुमत्री रु न्य ते राजा शृङ्ग यौ ते न रु न्य ते॥ २२॥ कुल्लि ते कुल्ले व ना स ग रा उ ड कुपुत्र ते कुल
 ना स ग रु कुमत्री ते राजा को ना स ग रु शोर ते दे स को ना स ग रु॥ ॥ श्री ना दो स रु द्राणि गुणालिनी
 महि पते॥ गृहाचार सु तो पति मर नो पति नो सहो॥ २३॥ श्री को दोष रु जा र १००० रुद्ध गुणति न १०० रुद्ध का
 का न न्या दे वि कुतु व क न नि दान गनु पुत्र पाई दिनु श्री फ्रा पु र व को प्रा न जा दा स रु गा मि नि रुनु पी ते गु न

त्वागतसुरसंस्थादेमागत॥८॥ अजिर्ननयेयाअर्ननेको श्रीजो नया को नि को सुरनया को सप्रममा
 नि को गया को वहु जने पाया को नि को स्ने॥ ॥ तस्मीलक्षणहिनेर कुलहीने सरस्वति॥ अपात्रे लभते
 नारी गीरी वरति वासवे॥९॥ तस्मिन् न दुःखा देउ वस्या को लक्ष्मी कुलहीने देउ वस्या को सरस्वति अ
 पात्रे सित वस्या को श्री यशो ईउ है पर्वत मा हो विष्णि पया ज सो हो॥ ॥ यस्तु नार्या विरूपादि कस्तुति २५
 कलरुपीया॥ उतरो तरवादि व सिजरानं जरा जरा॥१०॥ कोही पुरुष को अश्री विरूपादि नेत्र गवि वस्या को
 दे अमुवि रग राग र्ग्या ज्या ज्या शुष मा आयो स मग र्ग्या पैसा श्री कुबुटि ननु न नया पनि उचि ननु॥
 जस्य नार्या स्वपाव नतार मनु गच्छति॥ नि त्प मधुर मा धिर सा प्रीयानं प्रीया प्रीया॥११॥ कोही श्री
 आफ्र पुरुष का वस्या पाव स्या को दे रूप नि को दे नि त्प मधुर वचन ग र्ग्या दे सा श्री लई श्री ननु॥ ॥ यस्तु

लफले मयापनि विवति मा हा दूष रुद्ध पेति हो उनु पयो विचक्षण ते॥ ॥ नक्त नक्त सप्त पन्थ कार्याः
 कार्यं श्रुतु र्यता॥ सदा कार्यं पुसदे हा नेत य सर्व डा उधौ॥१२॥ नक्त अने के हे रि के न कार्यं तु संगरनु
 पराई कार्य मा हा सदे हन मानु यो गी शो नि हे रते॥ ॥ नेत य म कुलितानां राजा परोपं जि विना॥ नेत
 यज्ञाते सनुनां कृत्वा उर्व पकारिना॥१३॥ अकेलि अं को को जि विनि त्वा यु वे स न्या वस्या को राजा दे वि
 उरा वदे अगाउ का वै रि दे सि उ ले उनु पद॥ ॥ पाद पाद नां नयं चात् पशाना सि सिरो नयं॥ पर्वता
 ना नयं वजं जतु नादि पदो नयं॥१४॥ वक्ष को नय वयु क मत को नय रौ किल कात् पर्वत को नय वजं
 जतु को नय मनुष्य॥ ॥ माता यदि विषं दया पिता विंश्रै य नं युत॥ राजा के रौ ति वा न्या य सुर न
 कस्य जायते॥१५॥ कदाचित म हा म हतारि ले विष बु त्रा उ स ग्या वा वा ले वे वनु रग्या राजा ले अ न्या

यगनुगाया सरनकाहाजाना हो ॥ यत्रा जाहयौर समग्री सपुरोहित ॥ तत्राहं किं करिष्यामि जतोर
 ज्ञाततो जयं ॥ १० ॥ कोहि देसमाहाराजा मत्री पुरोहित सहित नचोर जया दे विर आग न्याहाउं मान
 दुद्ध ॥ विधाता विधितार स ललाते अतमाहिका ॥ देवो विनहि शक्रोति सविष्मति पुनपुन ॥
 ११ ॥ विधाता ते ज्ञा ज्ञातेषा कोट्यसौ कुतो दुर्ध विधाता ते तेषा कोट्य उता तेपनि मेतेन स कैने ॥ ॥ के
 र्मनो हि प्रधानेन बुधिन कि प्रयोजन ॥ पाषाणस्य कुतो बुधितेन देवो न विष्मति ॥ १२ ॥ कर्म हिन जया १७
 देवि बुधिको व्या प्रयोजन कसो न न्या दे विधुगा को व्या बुद्धि ते देता नयो ॥ ॥ कर्म न्यपि प्रधानेन रा
 निरुद्धो मुने गेह वसिष्ठ दत्ते लघोपि जान कि दुष नागीनी ॥ १३ ॥ कर्म नागे को पुमान दुद्ध नि को वै ल
 सु नत गृही कन विवाह गत्या कि सिना ते दुष नागीनी जेहुं कसै गत्या पान दुद्धेन कसो न न्या दे विवसिष्ठ रिषी मर

पुमि सतुद्ध स्वर्ग तस्य सहित ॥ १४ ॥ कोहि पुरुष को दोरा ली को सेवा गर्ना आफना वस्यमा वस्य कोट्य वन ले
 पुर्ण गत्या कोट्य पेसा मानि सपथी विमाहा वस्य पनि स्वर्ग नोग वास होला ॥ यपूत्रा से पि तु वस्यो त सपि
 ताये सुघोष के ॥ तमित्र यत्र विस्मयं जायारूपं वतिसंति ॥ १५ ॥ कोहि पुरुष को दोरा आफरा वस्य मो वस्य
 को दोरा ननु कोहि पुरुष का अली आफरा वस्य कोट्य ते तस्कन प्रतिपत्ता ननु ॥ ॥ जस्य जिवति जि
 वति विप्र मित्र च वा न्यवा ॥ सफलं जीवितं तस्य आत्मार्य को न जिवति ॥ १६ ॥ कोहि पुरुष को जिय को फ
 ल न न्या को कसो हो न न्या दे वि बुद्ध नमित मित्र वं नु जस्य गत्या को तस्को जिय को सुफल दुद्ध ॥ ॥ स
 जिवति गुण यस्य यस्य धर्म स जिवति ॥ गुण धर्म विहित स्य नि सफलं तस्य जिवितं ॥ १७ ॥ कोहि पुरु
 ष ते गुण धर्म जाना कोट्य तस्को जिया को सफल दुद्ध गुण धर्म न जाना को नया जिया को नि सफल

हुहु ॥ वाचा सरस्वति यस्तु नार्या रूपवति सति ॥ लक्ष्मीत्यागवति जस्य सफलं तस्य जिवितं ॥ १५ ॥
कोहि मनुष्यको वचनमा सरस्वति वसा कोहुं स्त्रीरूपवती ह् लक्ष्मी नया पनि त्यागी हुहु यो मनुष्य जि
याको सुफल हुहु ॥ धर्माच काममा मानां यस्य नैको नुविद्यते ॥ अजागर नुरसो पि निरचतस्य
जिवितं ॥ १६ ॥ धर्म अधर्मा काममो अजोगरगनु न सकन्या यो मानुस जियाको यव ननु ॥ ॥ धर्म सत्य
विहीनस्य दिनयाति विव्रिया ॥ सरोरुं का लवते ए स्वयं वैव पुनीयते ॥ १७ ॥ धर्म सत्य नहुना को दिन कोदि २८
नगयो रोह को वलु जहि आफै चिन्तै सकियो ॥ शत्रु र पिउ एवाया दोषा वाया गुणै र पि ॥ युक्ति र कि
वचो ग्राह्य नवाया उरु गोरवा ता ॥ १८ ॥ मनुष्य या पनि गुण को कुरा गनु जो ग मित्र नया पनि दोष को कुरा
गनु जो गे जुक्त सित कुरा गनु कुरा गनु हुनि दोष हैन ॥ ॥ अर्कत वन के ते वं प्राणै कर गतै र पि ॥ कत वं

मेव कत वं प्राणै कर गतै र पि ॥ १९ ॥ नगया को कार्य नगनु कवरणो प्राण नया पनि गया को गर्ह र गनु
॥ ॥ इति श्री चानक्य सार संग्रह द्वितीय सप्तक समाप्त ॥ २० ॥ ॥ काते च रिपुना सधि काते मित्रे
विग्रह ॥ कार्य कारो न मानितं कालते पो निवंदिता ॥ २१ ॥ कातमा शत्रु ते सधि गनु कालते मित्रे संग विग्र
ह गनु कार्य को कार मा वै रिहो काल प्रवद्ध पंदिन ते ॥ ॥ काते पंच तिनु तानि काल सहर ते पुजा ॥
काते सुप्रसजा मित्री कारो हि दु रति क्रमा ॥ २२ ॥ काल ते समस्त प्राणि को मा सगरा उद्ध काल ते पुजा को ना
सगरा उद्ध काल माहा पुतनु काल मा जागि वहु पेसा काल टारन यकनु हैन ॥ ॥ काला परोह ते विजं
पुन काला पुर्व ते ते ॥ काला पुव ते ते हृष्टि पुन कारो पि सहर ते ॥ २३ ॥ विउ लोपनु पनिका त माहा फाल फल फ
ल हते पाने काल माहा हृष्टि गद्ध ते पनिका त माहा पद्धि हरे नगर हते पनिका त मा पैति समस्त काल ते

गद्यु॥ ॥ यदि तो भुवि रापर चन्द्रा के नर मा भूत सर्व संहरते का तं तस्मात्कारो म होत॥ ४॥ आकाश दस दि
 गपनि ईन्द्र दुर्य आग्नि वायु रति सप्त सप्त सप्त गद्यु का स ज जो पु लो को दि दैन॥ ॥ किं करिष्यति वेदा
 य यत्र तै पो न वि शे ते॥ न ग न म पर कं गा मे रज के किं करिष्यति॥ ५॥ का गनु दु कुरो गरी कन को हिया उ
 मा हा ता वि वे के दनु सा त सा गो व द्या को अप न ते या को गा म हा हा धो वि का गनु दु॥ ॥ क दरी व न म धा द्या वे
 हि परा क्रम॥ अ वि वं क ज चाने गुण वा किं करिष्यति॥ ६॥ क उ रि व न को म धा मा हा अग्नि को का परा क्रम वि वा
 त न न या को गा उ मा हा गुण व ते का गनु दु॥ ॥ पर य पि न म जा दा से व ति कि त सा गी रा॥ सा गी रो ते ड मि दु ति
 प न य पि न सा ध व॥ ७॥ पर य का त मा हा सा ग र मा हा स मु ड ते आ फ्र म जा दा सा गी व द्या को सा धु ज न ते सा ग
 ल को ते द रू च उ दैन पर य का त मा हा॥ ॥ मे रु व ति त क त्या ते म ज ड सा ग र स्य र॥ प्रति प त न म हा सं त्ता

२५

२६

न व र ति क दा र न॥ ८॥ मे रु व त मा हा मे रु प र त च त रु द स वै को क र्ण न गरी स मु ड ती र्य दैन यो मा हा ए
 रु स ति र गा र व द्या को दु ब ल दैन क दा रि त॥ ॥ वि श ते ली पु र प रा वि शे ते का म लो त प॥ पा र अ वि श ते
 नि च द या सा धु पु वि श ते॥ ९॥ ली वि क म ते व च न रु द्वा ल न चि त प रु द्वा नि च जा ति वि रि स को व च
 न रु द्वा॥ ॥ सा धु स मा न मा य न न वे ति दे रु वि क्रि या॥ उ प का र स ते ना पि दु ज न के न ग र हे ते॥ १०॥
 सा धु ज न पु रू ष ते आ फ्र स रि ल वे वि फु ला ग रु द्वा उ ज न ला र्थ स य उ प का र ग या प नि आ फ्र ग रि दु दैन॥ ॥
 बु ध बो ध्या नि सा ल्या नि ना बु ध सा ल्य बो ध या॥ पु त्र अ ए क ते रि पे च अ रि को न प र्ण ति॥ ११॥ ता नि पु रू ष सा ल्य
 न बो ध ग रु द्वा अ ता नि पु रू ष सा ल्य न बो ध ग त नु द दैन क मी न त्या दे वि वा ति वा ति ता सा
 को आ षा न दु नो ते न दे षा को ज हें रु द्वा॥ ॥ ना रि के ल स मा का ला द स्य ते के पि स र्ज न॥ अ न

विवदराकारा वहिरे वोभनोरसा ॥ १० ॥ नारीकेलजलोदुद्धसर्जनसया अविननिको नानि केहुदे म
 नाकेडुर्जनसिते कुलेकपतेहुद्ध ॥ ॥ चन्दनंशितलं चन्द चन्दनेनतुयनुमा ॥ चन्दचन्दनयोपध साधु
 हर्षकशितलं ॥ ११ ॥ चन्दनमध शितल श्रीचन्द श्रीचन्दनशितलचन्दनदु योचनद शितलसाधुज
 नदुद्ध ॥ ॥ अधमाधनमिद्धति प्रितिमिद्धतिमधमा ॥ उत्तमाधनमिद्धति मानोहापदनाधन ॥ १२ ॥ १०
 अधर्मिजनलेधनकोवहुतिईहागदु मधमजनलेधनकोई आवहुतिगदु उत्तमजनलेमानकोव
 हुतिईहागदु सभसजनलेधनकोई आवहुतिगदु ॥ ॥ ममिकावर्णमिद्धति धनमिद्धतिपाविवा ॥ नि
 चाकलरुमिद्धति सातिमिद्धतिसाधवा ॥ १३ ॥ साक्षतवालवाको आधारगदु निचाजाति कलरुकोआधा

रगदु साधुजनलेनक्ति को आधारगदु ॥ ॥ ईतरावर्णमिद्धति रूपमिद्धतिदारिका ॥ सातयकुलमिद्ध
 ति स्वर्णमिद्धतितापसा ॥ १४ ॥ सभसलोकलेधनकोईहागदु द्दौरीलेरूपकोई आगदुनु सपुरषले
 कुलेकोई आगदुनु तपसिलेस्वर्णजानाकोई आगदुनु ॥ ॥ अतिक्रमनयडव अतिरोत्तेनयसुष
 परपिडात्रयावृत्तिनैवसाधुषुविद्येते ॥ १५ ॥ अतिकष्टगरधनकपाउनुतयो अतिलोत्तगरी सुषगर्लनयो
 पराईलाईपिडादिनु जयोपेतिसाधुजनलेकापगदैनु ॥ ॥ नसकानरनेप्राप्ता अकार्यनैवकालयेतु ॥ स्वल्प
 कार्यनकुर्याच निसफलं नैवकालय ॥ १६ ॥ सानिपुरुषलेआफुलेनसकाकोसकुदु नैवअकार्यपनिग
 दैन सानुकार्यपनिगदैन निसफलकार्यपनिगदैन ॥ ॥ दौलेदौलेनमानिका मूर्तिकेनगजेगजे ॥ साधवो
 नहिस्वर्च चन्दनेनवनेवने ॥ १७ ॥ सवैपर्वतमाहा हिरामानिकेहुदैनु रुक्मिकागउस्यजमा गजमोति

दैने साधुजन स मरु नि कोरु दैने सवै वन माहा श्री खन्दु दैने ॥ परकार्य उतात्ता स्वकार्य द्वि पुसाध
 य ॥ सुक कार्य निरति व राज कार्य सु विरु मा ॥ २० ॥ अर्क को कार्य जु गुणि गरिगनु आ पु कार्य सिधुन
 गनु मित्र कार्य निश्रयं गरिगनु राजा को कार्य वलवत तै कन गनु ॥ ॥ जल ते षं व निवा नां य दत्त
 तन दृष्ट ॥ अचल मपि साधु नां शिरा लेष वा ति दृति ॥ २१ ॥ निचा पुरुष ले ग या को कार्य पां नि मा ॥ २१
 लेषा को ज सो रु द् साधु पुरुष ले ग या को कार्य दु ग मा लेषा को ज सो रु द् न व ल न्या रु द् ॥ ॥ २१
 मरु ता मा पदं सति मरु ता मपि संपद ॥ इ तरे व मनुष नां ना पदो नै व संपद ॥ २२ ॥ दुःख मनुष्य को
 सुष प निष्ठु त रु द् दु ष प निष्ठु त रु द् निचा जाति को सुष प निष्ठु त रु द् दै ने दु ष प निष्ठु त रु द् दै ने ॥ ॥
 सनु तुष्य अत्रे न व ल्प शो वे न व नु मा ॥ विष्णु स्मर न मात्रे न मरु ता कल संपु तै ॥ २३ ॥ माहा देव संतु

दृष्ट य अर्क पत्र ले चनु मा सतु द्गनु वल ते सन ग रा कन विष्णु सतु द्गनु मु मर ना ले स पुरुष संतु द्ग
 नु कन जो रि ॥ ॥ लेष क पा य के चै व ये चान्द सास्त्र विं त ये ॥ सर्व य स निष्ठु रा क्रिया वल अ पण्णि ता ॥
 २४ ॥ लेष न्या सास्त्र जाना ले यश निष्ठु र्भ को क्रिय ग दै न क्रिया वल पं दी त ले न न्या को मा नु ॥ ॥ वो हि न्य
 मय वा निज राज या वा त पौ ध न ॥ शिरा व न्ना रि कु र्वा ले रु वि कु र्वा नि का त रा ॥ २५ ॥ य पारी यो रा को य पार रा
 जा को य वा त पौ व न र्वा र यो क मुरा ले ग दु का व र ले रु वि ग दु ॥ ॥ वे जे द् न ना यो वा निज विद्या विच व रु ले
 तं ॥ अतु का ल म प त्या ची मा ना ची न्द प ती पु जे ॥ २६ ॥ य ना थी ले य पा ल ग ला विद्या ची ले अ नै के सास्त्र षे जे ला
 पुत्रा धि ले अतु स म य मा हा प्र म ग ग र्हा मा ना धि ले राजा को सेवा ग र्हा ॥ ॥ उ जन प्रिय वा दि च नै व विद्या स का
 ल यः ॥ म धु मु व ति जि ह्वा गे हि दि हारा रु रं वि वा ॥ २७ ॥ जो उ जन रु द् म ना कै कुरा ग रु विद्या स दि नु द्द नः

मधु जि तासा दुप पावा टष था जा हि व च ते ग दु रु द य मा ल ह ल न या का विष व स्या को रु द ॥ ॥ मूष प स द रा
 का रा वा वा व न न शि त ल ॥ रु द य के ति सं यु क्तं त्रि वि ध भु त त म ए ॥ २४ ॥ मूष ज न्या रु म ल का पा त ज
 लो अ ति को म ल व व न रु न्या श्री ख ड ज लो सि त न न्या रु द य मा ल क सो रि ति या ज लो र् इ ति न चो क सो
 जा व रु न्या भु त हो रा न न ॥ ॥ ख र स ष प ता त्रा नि पर द्ये दो नि प स्य ति ॥ आ त्म ना वि ल सा त्रा नि प स्य न पि न प स्य
 ति ॥ २५ ॥ रु ज न ते अ का र्य को द्वि ड ति र ज त्रौ न या प नि ष उ जा ज ता ग रा उ द्य ॥ आ फ्रा द्वि ड न न्या ष उ जा ज त्रौ ३२
 न या प नि ति र ज त्रौ ग ता उ द्य ॥ ॥ उ र् स नि या च यं मूर्ख ध न व ल व नि उ ए ॥ दूर स्थे पि च द स्य ते कि रु का
 ई व पु ष्पि का ॥ २६ ॥ मूर्ख रो क क न ध ना ध्य ते न स स्फा र ग दु जा व त्र नि गु नि ते पर व सि क न हा त म्ने उ द्य
 ॥ ॥ मूर्खो पि परि रु त य पु त्र स दि प द प सु ॥ वि शे ते वा क सि ल स्य ॥ अ द र्श क च को य था ॥ २७ ॥ मूर्ख स

वै श्वो द नु प यो पु त्र म म नु म प सु ते सा हो व व न ग डा क ए मि त्ता ज लो दि द्य व र्थ मूष ले ॥ ॥ सर्पा कु त रं रु
 ल सर्पा कु त रं व र त ल ॥ म त्रौ ष धि व सं र्थ व र के नो प सा म्ने ते ॥ २८ ॥ सर्प पा ने न नि को रु द्य रु ज न प नि न नि को
 रु द्य सर्प त र ड उ ज न न नि को क सो न्या दे वि म त्र व ष धि ते र्थ त्वा ई व स्य ग ल उ रु द्य रु ज न के ते क न को नि ते
 रु द्य ले प नि व स्य ग ना उ रु द्य दे न ॥ ॥ रु क्षि रु स म रु ष्म न श त रु स्मे न वा जि ना ॥ शृ गी नो ड स रु स्मे न दे स
 त्या गे न रु ज ना ॥ २९ ॥ रु क्षि सि त रु जा १००० रु त र रु रु रु यो रा सि त स त १०० रु त ता रा रु रु रु रु गी सि त
 द स १० रु त रा रु रु रु रु उ र्ज न न या दे वि दे स त्या गी नु ॥ ॥ रु क्षि नो ड स रु स्मे न क र्त्ति रु स्मे वा जि ना ॥ रु गी न
 क ए रु स्मे न र व ड ग रु स्मे न रु ज ना ॥ ३० ॥ रु क्षि त्वा ई अ क स ति नु यो रा ला यु वा मु क ति नु रु गी ला रु का
 रु ति नु उ र्ज न त्वा ई व ड ग ति नु ॥ ॥ रु र्ज न परि रु त यी सा स्त्रे ना ल क ता य दि ॥ म नि मा ल क ते स र्प कि

नमो नमः कर ॥ २० ॥ उर्जन नुपु यो सार्धं गहन नाया को सार्धं नया पनि उता गहन नमो उर्जन सित सं
 गनु हो डनु पयो ॥ ॥ पात्रे पात्र विसेषे न धोनु पत्र योजया ॥ त्रिनापि शु वते त्रिं शिरानि शु वते विषं
 ॥ २१ ॥ पात्र अत्र विसेषक सो नया देवि गार् र सार्धं सगराणा देवि गार् उ हो दो विष अउरु तसे अर्थ ले
 पात्रा वरु दु ॥ ॥ भु उ शत्रु मिति प्रत्ता नो प मते कडा चने ॥ काले उर्जन मायाति नून स्य वहि विजवत ॥ ॥
 निच शत्रु ननि हे लान गनु को हिन मा हा शत्रु को डागा ला ॥ त्वरु के नरी मा हा अग्नि को वित्त पया जे हि ऐ के
 योत ना सगती ॥ ॥ सखि के के से के दोषा अ सिति मधु पि ग ले ॥ सत काने च षो दे च कुषु स्या तन वि शति
 ॥ २२ ॥ दे गोता गोडा रु न्या को दोष दु ॥ ऊई या आषा रु न्या को दोष दु ॥ काना षोत डा को दोष
 दु ॥ ऊ या को दोष पेति या हा दने ॥ ॥ स्थानु कुत उरा चारी मित्र व्रे हो परा ते ज्यो ॥ विस्वास स मय

२२
 २३

कार्य विना संप्रपगति ॥ २३ ॥ स्थान सवस्था को उरा चारी सग मित्र व्रे रु हो डनु पयो विस्वास गत्या दे वि कार्य को
 ना स होला ॥ ॥ मृदु नै व मृदु हं लि मृदु ना रु ति डा न ॥ ना मा मृदु ना कि विन् त लं ति अतरो मृदु ॥ २४ ॥
 कव लो ले सा हा लाई सयार गच्छ कुव लो लाई साधन लाई सके नु दै न कव लो सा हो न डा पानि सा हो न नु ॥ ॥
 वने प्रच रिते वहि उरु मृता निरु दिति ॥ स मुत म मुलं या नि आ पो व मृदु सित लं ॥ २५ ॥ ग मि न डा पानि सित ल
 ननि को क सो न न्या दे वि ग मि ले पाषा मा हा ग पा न षा या पानि ज हरा रु द्ध सित ले सा डा जरा स मे त षा दु ॥ ॥
 ए उ सा म व रि व द्ध कं न्या व व रु सा विनि ॥ उ वरा नि च मत्रा नि उर त प रि व ज य त ॥ २६ ॥ रो व ल रु न्या गो रु
 म ना के कु रा ग र्वा क न्या न रु क न्या षे त पे ति प रि कार त्प क्त ग न्या न रो रु द्ध ॥ ॥ र रु स्य जे ड मे पु न्य पर
 दोषा नु क्त न ॥ क ले रु प्र कृ ति वै व उर त प रि व ज य त ॥ २७ ॥ उ प्र को कु रा प का स ग र्वा मे पु न को कु रा ग र्वा

अकारको दोष को उरागर्वा विना काजै उगरागर्वा यत्ता सार दोदनुपद ॥ ॥ अथ याना गजो मनावे वं पुमुतिका
 तथा अत एरोडासि दुरते परि वर्जयत ॥ ॥ यो राह लिमर्त नयको चारोगार् विधुवा लो पेति तार दोद
 नुपद ॥ ॥ उजन वं स अमित्र परस्वा मित्र ता लीये ॥ गोजिर्न वल जिर्न व दूरते परि वर्जयत ॥ ॥ ॥ उज
 न सित मीत्रागर्वा परस्वा मित्रे न्या लीये ॥ रघुगार् फात्ता को वल लाउ न्या पेति परिकार दोदनुपद ॥ ॥
 न विस्व सेद मित्रे न मित्र त्या मित्र विस्व स ॥ कडा वि कुपितो मित्र सर्व गुह्य प्रकास यत ॥ ॥ ॥ वै रि सित वि
 स्वासन गनु मित्र नया पनि विस्वा सन गनु कडा वि त मित्र दुष मा न्या गु प्रको उरा प्रकास गती ॥ ॥ न विस्व
 सेद विस्वा से विस्वा से नैव विस्वा से ॥ विस्वा स नय भूपती मूला नैव निरुतति ॥ ॥ ॥ अ विस्वा सि सित विस्वा सने
 गनु विस्वा से ग या देहि नाना नय होला ॥ ॥ नदि नाचने विनाच पुगाना सल्लापानि ना विस्वा स नैव कते वं

३४

ली उराज कुते पुवा ॥ ॥ नदी सग नख रुन्या सग सल्ल सग ली सग रति जात को विस्वा सन मानु ॥ ॥ नदि तीले
 पुवा व आ या व ना रि निरा पुवा ॥ सा भत भ हितो राजा न च वेति निरा पुवा ॥ ॥ नदिका तिर को रुष को हि थो
 धार न नया को ली मंत्री न नया को राजा ऐति को आ पु केन ॥ ॥ यदि म स्या सति प्रीती त्रि नित न
 कारयत ॥ दूत भव्य प्रयोगे च परा अदारु डसन ॥ ॥ ॥ प्रीती को ई आ गन्या ले ई तिन चो कने गनु का का नया
 दे वि जु वा वे ले तु नयो पुरुष नया कि ली दि जानु नया ई तिन चो कने गनु ॥ ॥ नग देरु स विस्वा ह कु यी दे
 ड ल विग्रह ॥ आत्मे नापित चो क्रोध मित्र वैर न कारयत ॥ ॥ ॥ कुनिति गन्या राजा न्या य निति नगर्वा मत्री वेड ही
 ने वा सन उते नग नया को स न्या सि ऐति को से वान गनु क्रोधि रु न्या मित्र सित वैरि न दुनु ॥ कुनय मत्री जाना विपु
 व विष ति पति ॥ सजा जि न वृत्त न स न से वति सदा पुधा ॥ ॥ ॥ कुनिति गन्या राजा सुदि नित सग व स न्या वा सन कु मत्री

॥ गवस्था को राजा उत न गनया को जोगी पे नि को सेवान गनु ॥ ॥ कुमत्री नासि विद्या स कुनार्या या कु
 तोर नि कुराज नासि निवृत्ति कुदे से नासि जि वि तं ॥ ५२ ॥ कुमत्री देउ विद्या स हुदै न कुस्री देउर नि
 हुदै न कुराज पावति हुदै न कुदे सभा जिउ हुदै न ॥ ॥ नासि सत्य सदा यौर नासौ च विष लिपति
 मश प सुं हउ नासि युत का ले वर्य नही ॥ ५४ ॥ चोर देउ सत्त हुदै न पुनि निका पु रूष को सहि हुदै न स
 डा नि क्षि त वे द्या को कुल न को सो व हुदै न जु वार को क्रिया सहि हुदै न ॥ ॥ दू वि पो धि पु म ग्रा च ड प तौ उ
 रू सि ष्य यो अ तर नै वे ग ते व रू स्य व स न स्य रा ॥ ५५ ॥ को हि पु रूष सत्ता नि ले ड ई ग्राम ए को अ ते त
 वा र हि उ डे न वा स न को र अ ग्री को अ ग्री को अ तर वा र जा रु डे न अ पु रूष को अ तर वा र जा न डे न
 उ रू शि ष्य को अ तर वा र जा न डे न पा हा दे व व सा हा को अ र वा र जा न डे न ॥ ॥ लो का या त्रा ज य त ज्ञाः

३५

डा भि न ना ग ति त त ॥ प च य त्र न पि ये ते न क र्या त्र स ग ति ॥ ५६ ॥ लो क सा ई रु पा व त अ भा व त रा ज स प
 ष ता गी ई पा च चो क न न या को बा ड ता जा नु डे न ॥ ॥ ना ज न पु कृ ता या ति वै क स्य व व रु कृ त न ना रि धि त
 बु धि ष्या न मू खं स कृ त वे दे ॥ ५७ ॥ ना ज न प नि से तो हुदै न न व डु ना ते नि कै ड रा मा हा र स हुदै न ली को धी
 र बु ड्ढि हुदै न मूर्ख ते स कृ त जा दे न ॥ ॥ रि न से ष अ ग्री से ष अ वा धि से ष त थै व च ॥ पु न व ड्ढ य ते ज स्य त
 र मा से ष न का र य ॥ ५८ ॥ रि न को से ष अ ग्री को से ष वा धि से ष ये ति जा त को से ष न रा ष नु प दि व र रै जा ड
 ॥ ॥ उ दे ग के त रु कं ड यु त म श प र ली य ॥ नि ठा मै यु न म त स्य से व ते त हि व ध न ॥ ५९ ॥ का दे अ ग रा ग नु ज यो वि हा ना
 को ध न बु धि त नु ज यो म श पा न वा नु ज यो प र ली दे उ जा नु ज यो नि ड्रा मै यु न अ त स्य पे ति को न से वा ग नु कृ त
 हो व डे जा ड ॥ ॥ प र डारा प र स्य व प रि ठा ड प र स्य व ॥ प रि हा स्य ग नु स्य ते ज त्र त प रि व ज य त ॥ ६० ॥ प र डारा

को कार्य परछी पर धन पराई सित विवाडग न्या न यो पराई सित रु सनु भयो ऐति बो क गु रू या न मा रु ज न
 गरी हो ड नु प यो ॥ ॥ परोक्ष कार्य रु नारु प्रत्यक्ष पीय वा दिना ॥ वजय ता र सं मित्रं र व कु न पु यो नु यो ॥ ५२ ॥
 दू पारि रा खा को कार्य नाश गरि के न भ ना के कर ग र्ता मित्र न या पनि हो ड नु के सो न न्या दे वि वि ष प या परि ति मा रु मा वि
 वा त दू ड रु रि डि या ज सो रु ॥ ॥ कु दे स व कु र ति नै व कु नार्या या कु न डि नै वा कु ड व व कु लो र्य र वं ज य प डि त त ड ॥
 ५३ ॥ कु दे स मा रु कु र ति न या को वा न मा ली कु र्ता प्र ली कु न डि कु ड व कु र्ता ऐति प रि का र पा णि त ले हो ड नु प यो ॥ ॥ ५४ ॥
 उ र्ग शी य डी पू ये न र ना य डि ति रो त मा ॥ गो पा ल मि नि का रै व व र्ज नि या पर छी यो ॥ ॥ ५५ ॥ उ र्ग शी र चा ती रो त मा गो पा
 ति मै नु का र् इ र्ग र्ज का र्य प स र ज सो न या पनि पर छी हो ड नु प ड ॥ ॥ ये षु का र्य षु वि षे षु स रु द्या पि पं तो
 ड यो वि प ति षु मा रु दो षा परि बु जै दि र भू न ॥ ५६ ॥ का हि म नु ष का त या पनि का र्य मा रु से उ ग डु ता को

ले ल ग हे रि के न वि वा रु ग ना कि सि ता उ ख ना गा नी नै रु ॥ * ॥ मा नु कु स न वे त स्त्री दो षो पि ग न सं रु तिः ॥
 गु नो पि दो ष ता या ति व त्री न तै वि धा त रि ॥ ५७ ॥ आ प्र ष्य तु कु र ले ग या को त भू न न या दे वि दो ष न या दे षी
 पनि गु ण रु द्ध अ नु कु र न न या दे वि गु ण ग या पनि दो ष रु द्ध ॥ ॥ किं करो ति न रो प्रा ता प्र भू मा न रु के त
 ती ॥ प्र या ते न भ नु षा नां बु धि क र्मा नु सा रि नि ॥ ५८ ॥ ता नि भ नु अ न या पनि क्वा रु द्ध जा रु क र्मा ले तै
 जा रु ता रु जा नै प ड् पूर्व को पनि जि उ न्या वा तो रु बु धि क र्म स गं रु द्दै रु ॥ ॥ रु स्त स्य रु ष न दाने स त्प
 क र स्य रु ष न ॥ शु तं च रु ष न के न रु ष नै कि प्र ये ज ने ॥ ५९ ॥ रु त को ग रु ना दान ग रु कं ठ को ग रु ना स त्प रु
 रा ग रु का न को ग रु ना ध र्म यु रु आ न र न को का प्र ये ज ने रु ॥ ॥ व रा त्र रु ष न स्त्री ना रु र्मा ना पु षा
 रु ष न ॥ रु र ति रु ष न पु सां प ति ना रु ष न कृ पा ॥ ६० ॥ स्त्री ज न को सो ना सु रा त्र आ प्र ष्य रु ष न

लहनु पुरुष को सोचा वा का कुसमा निकोग रिव मुनु स्यामि को सोचा दया वत रुनु ॥ नभत्रनुष
नचनु नारीना नुबने पति ॥ एषी विरुष नराजा मित संवत्र नुबने ॥ ११ ॥ नभत्र को सोचा वनु ना ॥
छी को सोचा पुरुष एषी विरुष को सोचा राजा सं पुन लोक को सोचा थित सोचा व ॥ ॥ महतारी चवे
जेष्ठ न निवा मान मुते मं ॥ कंसा रि पाउ द्या तेन का तिय स्य विरुष ना ॥ १२ ॥ तु त ले अ प मान ग ग्या को
पनि सोचा रुनु निवा से मान ग ग्या को पनि सोचा रुनु देन के तो ले न्या दे ॥ श्री रुनु ले का तिना ग कने ॥ २०
पाउ ले नि विग ग्या थो मिया को पनि रुनु ति सोचा रुनु ते छे हो ॥ ॥ सुचिनु भिग त तो य सुविना
री पु ति वता ॥ सुचि अभा करो राजा सतो विवा लन मुवि ॥ २१ ॥ एषी विरुष को पानि मु वि प्रति पुता ॥
सुचि अभा वत राजा सुचि सतो विवा लन मुवि ॥ ॥ सुचिनु भिग त तो य यत्र ले पान विद्य ते ॥ ले

सति कुवितं येन केनापि संहति ॥ अश्वानर गो पुदे उरादा सर पीयदा ॥ २२ ॥ आफला विपति विषे कते दे उ
पनि नजन गर्नु विपति ह का उनु निमि त हि नो श्री रा भव नु ले पति रुनु मान सित मित्र मे हे ग ग्या क विद्या वा
राउ व ले पति ग ई को पु रु स मा ता को बी यां आफला विपति मा हा ॥ ॥ ३ हर सागर निर्ण स भ ग वान र व लं ॥ अ
नुत पु र्व रा मे न से उ व न्य स मा ग रा ॥ २३ ॥ अं दि के वा तु तो स या मानु से नि हे ता गर्नु रु दे न रुनु मान सै न्य रुत
लिकेन से तु वा धां का विषा रा भ व नु ले ॥ ॥ दूय संत वय पंच विरोध व पर स्यं परै रा क्रम सो ने पि वयं प वत्र
य स तं ॥ २४ ॥ दूधि छिर राजा के रु जो ध न रा ई भ दा ज या ति मि स य ना ई वि रो ध ग रा व स्या का बी यो क सो
न न्या दे मि ति म्भार जा रु नि प त्या या हा मि पा र ना ई दौ उ हा मो रा ज्य रु नि प त्या ग ति मि स य ना ई दौ न न्या
नि ध न्या ॥ ॥ हि ता नी ता च के ता नि रु त्वा वै र भ सा त क ॥ ज्ञा त य स त त या ति ज प रं प र य व वा ॥ २५ ॥ आफला ग्या

मिमांसा मिथु मिथि कन आप्ररा ज्योता दाजू जाई सित वैरि नगनु पराई लाई वैरि न भनु रे हो अर्चते उ ये तगनु
पयो ॥ ॥ विंता ज्वर भनु खाना अस्थानां पै पुनं ज्वर ॥ अमो जा गै ज्वर स्त्री नां वेला नामा तयो ज्वर ॥ २० ॥
भनुष को ज्वर न न्या मै पुन स्त्री को ज्वर न यो अजागो वल को ज्वर न यो सुख ॥ ॥ अधा ज्वर भनु खाना अ
नाथा वाजिर जरा अमै पुन जरा स्त्री नां अस्थानां पै पुन जरा ॥ २१ ॥ सदै दिन पयायो मानि सचा देव
ध हो ला बहुति मै पुन गनी स्त्री वध रुद्ध मै पुन ले ॥ ॥ कष्टा वति पराधिना कला वा स विरा पु या ॥ नुत
पुर्णार्थ सजुं को सर्व कल उ रिद्रता ॥ २२ ॥ भनुष को कष्ट न न्या अर्का को हासि पेहि न द प निपर के दिन न
या पति पेही न न्या पति नुर कष्ट अधि को धन सकि केन पदि रिद्र न या सर्व कष्ट ननु ॥ ॥ अथी तो वा
विनो मूर्ख प्रवासि पुष्ट वक ॥ जिवितो पिष्ट त पचं प्रचै ते दु ख लागी नि ॥ २३ ॥ अतिक्रम ग रि कन वन्या

पोषा नं परि तन्य अ न्यथा ने सुविद्य वि ॥ २४ ॥ नुमि माव सा को पति सुवि जिउ या को था उ न नान रिषा
को था उ सु विद्रु ॥ ॥ न सना सुध ते कां स ताम मल मन मुध ति ॥ रज हा सुध ते नारा न दी वै गै त सु
धा ति ॥ २५ ॥ न स ले का स मो ना रुद्ध अ मि तो ले तां म पुषु रुद्ध रज स्था न या स्त्री मुध रुद्ध न रि स व
रुद्ध आप्र वे तो ले ॥ ॥ पितुर त पु र उ द्रा ला तु उ द्रा मा ह न सं ॥ गो पु वा ता स म ड द्रा स्व य मे व रु
षि वु जे ॥ २६ ॥ वा वा ले अत क पि डि नु रु नु न रु ता र ले नान स डि नु रु नु गार् लाई स पा न डी नु रु नं अ
पु रु सि ग ना नु ॥ ॥ क पि ला श्री र पा ने न वा स नी ग म ले न वा वे डा शर वि रा ने न स मु ड न र कं वु जे ॥ २७ ॥
को र भनुष ते कै तो गार् को द द वा न्या वा स नी स्त्री स ग पु स ग ग न्या मु ड नै क न वे ड को अ शर वि रा

गन्धर्वे लाकन नरक वास होता ॥ सुदिहतेन ये तु कने प्राप्त के निरंत लं ॥ जिव लातो न वेद ३. न तत्त्वाने
वजायते ॥ सुदिनि ली को हात पचार महिना पेक को हिवाहन से धार वसा पसतार हुड हो ननुः
मनु जया पदि कु कुरे को जो नि होता ॥ सिलहि नो तु जानारी दृते ही न तु जो जन ॥ वल्लहि न सलंका
ले विशाहि न डि जो तपा ॥ सिलही न जया का ली दृते हि न जया का जो जन वल्लहि न जया को अस
का ले विशाहि न जया को वासन का पला गदेन ॥ सो जते सिले पय सो जते डि वता डि ज ॥ सो जते त
पसा जुते वन मुरर सो जते ॥ पोषरि को सो जा के मत वासन को सो जा त पसा ले जु ते जया को मुर
को सो जा न्या उहु ॥ प्राज्ञा सव विधानां पूर्वा ता के ले सेवं ॥ पुरुषा ये वचन नारी नां गर्वा नां च
ते तो सवं ॥ वासन को र का ज जगते पूर्व को र आ के ल रुग नु ली को र सा पुरुष गाई को र आप हू

सा को या न ॥ अग्नि होत्र फलं वेदं सिल वृत्ति फलं अतं रति पुत्र फलानां ३ तनु ते फलं धनं ॥
वेदं जाना को फल अग्नि होत्र गनु सा ल सु न्या को फलं सिल वं त रुनु ली पु स ग ग न्या को फलं पु
त्र रुनु धन जया को फल ३ तनु रुनु ॥ अग्नि रुति ता पे न सूर्य रुति तं ति मि ति ॥ राजा रुति दं
देन तपसा वास एो दे ॥ अग्नि रु रु ता पते सूर्य रु रु स के र ने ले राजा रु रु अं डं ड ले वासन रु रु अं त
पते ॥ सन सा के रु त मा स को र न पथितं ड धि ॥ तर्ज ना ड त म अ व तु ल्य गो मा स न अ न ॥ ग हू या को
मा सु हा त ले फा या को ड धि तर्ज नी ले डा त यो ट नु ऐ ति प रि का र गो मा स तु ल्य हो ॥ न रु न्या न म ति ड आ रु
न्या मो न दृ ष्य ते ॥ त्रय स ला प रि त्त अ न स मा स यु धि धि र ॥ आफु से व ध ग रु दैन वचन नि दि
तु दैन हे तु प नि दैन ऐ ति बो क न ग रि मा सु षा नु रु रु जु धि धि र राजा ॥ न मा स न स ने दो ष न

मन्त्रनवतुनपासापरिचयानि निवृत्तिस्तु माहाफलं ॥ १॥ मासुषायापनिदोषदैनैयुन
गत्यापनिदोषदैनैयुन मयषायापनिदोषदैनैयुन आक्रुतलेग्याको कुलायमगुदोषदैनैयुन ॥
चतुसागरपजत योदयापृथिविभिजां ॥ निषाद आधियोमासं तुलेमेतविदुबुधा ॥ २॥ वारैपदि
ममुउतेदेकाको पृथ्वीवीको राजालेडानगर्ता नृपाक्षितैकेनलेहलायो माहा पुनरु ॥ ॥ अ
गिरापल्लीयो मूर्य सूर्यराज करानिच ॥ नित्यमेव पवारैन सद्य प्रा नरुरानिष ॥ ३॥ अगिपनिषी ४०
पनि मूर्यराजा यो न सूर्य ऐरु चोकलेवाडै प्रा नरु ॥ ॥ मुक्कमा सल्लीयो वडा वातांकेतुरुणि
डधिया पुजाते युननिडा सद्य प्रा नरुरानिषत ॥ ४॥ मुक्काको मासु रथल्ली गतोडही प्रातका लेकोमे
पुन निद्रा विहान कोषामरु चारचोकलेवाडै प्रा नरु ॥ ॥ सद्यमा सद्यतंसद्य वाराल्ली विरजेजन

कुपजलकृतकाया षडतेमानपोसके ॥ ५॥ आलोमासु आरोतौति तरुनील्ली श्रीरकोनेजनः
कुक्काको पानि वरको कागर्दु प्रयोकेलेसलेतुपुष्टु ॥ ॥ अर्नाडसंगुणपृष्ठपृष्ठाडङ्गुणयथा ॥
यस्यसाङ्गुणमासं मासदङ्गुणयुतं ॥ ६॥ अर्नको आचगुणरोतिको रोतिको आचगुणदूडको दुडको
आचगुणमासुको मासुको आचगुणयुतको दुडु ॥ ॥ पचश्रीपुविनस्यनितधोरुवस्योनर ॥ अतिः
मानिचकाभिचगुमडेधितचैवच ॥ ७॥ रपावजनावजनावाडैमत्तूहोलाकोकोनन्यादेसि अरु
कान्ति क्रोधिरोनी अतिगुमानि अतिदिनार रपावजनाकेनतसकनागलेवाला ॥ ॥ गोमि वि
पुववैदेवे सत्ये जीसंत्यवाडिनि ॥ अतुवैडानसिलेच सप्रमिधायतेमदि ॥ ८॥ गार्डसवै ब्राह्मण
सवै सति सवै सत्यवाडि सवै अरोनि सवै डानसिरसवै रसातजनालार् पृथिविले ३ पाईलावना

६३॥ ॥ असारे पिह संसारे सर जेव चतु हयं ॥ कांसा वा सवता मगो गगान तु तु पुजेने ॥ १०० ॥
 असार स हार माई चार थोक सार हो सा का ज न्या दे वि जा हि जाई वा स गर्नु स पु र व स ग स ग गर्नु जा
 हा दे व को पुजा गर्नु स सार माई चार थोक सार हो ॥ ॥ ई ति श्री वान क सार स ग रहे तु ति य स ते के
 स ना प्र ॥ पु मा ॥ ॥ स च ते २५४ चैत्र शु क को ड स मी ति व न श्र य शु क म योग शु क वा र हो दि न
 मा पु र्न ग रि ते वा को हो ॥ ॥ गु ण दो व वि वे का य धि रा य व ह त प रा शु र न रि त म न्दा स मी ता
 प डि ता ति ह ॥ ॥ जा ह अ स र स द श्रा ता इ ह रि ह रि वि न स वा य डि दु र्ग म शु व द्वा म म डो पो
 न शी य ते ॥ ॥

६०

४१

2319